मनकीबात पर विचार

#ThoughtsOnMannkiBaat

Discussion Forum

Discussion about #MannKiBaat #99th Episode

April, 2023

Volume : 01 ISSUE: 01

#ThoughtsOn MannkiBaat Discussion Forum

MannKi Baat

99th Episode

Scan and Listen the
99th Episode of MannKiBaat

Contents

#ThoughtsOn MannkiBaat
Discussion Forum

Topic: Why this Forum? & Highlights of Narendra Modi ji 's Speech at 99th MannKiBaat **05**

13 **Topic:** India's Commitment towards Solar Power & Renewable Energy

Topic: Kashi Tamil Sangamam and Saurashtra Tamil Sangamam **18**

21 **Topic:** Organ Donation; New Scheme of Narendra Modi Ji and its Benefits

Topic: Economical Development of Kashmir **24**

Topic: Women Empowerment is an Oxygen to India **27**

Topic: Lachit Barphukan and Vallala Vanniya Maharaja : a Comparison **29**

#ThoughtsOn MannkiBaat

Discussion Forum

Let's Talk about #MannKiBaat

#99th Episode

Shri. A Ashvathaman
Founder
Thoughts on MannKiBaat
State Secretary, BJP Tamil Nadu
Topic: Why this Forum? &
Highlights of Narendra Modi ji 's Speech at 99th MannKiBaat

Padma Shri Prof. Ashok Jhunjhunwala
IIT Madras
Topic: India's Commitment towards
Solar Power & Renewable Energy

Shri. D.K.Hari
Founder, Bharath Gyan
Topic: Kashi Tamil Sangamam
and Saurashtra Tamil Sangamam

Shri.Dr Rajkumar
Founder
Lifeline Groups of Hospital
Topic: Organ Donation; New Scheme of
Narendra Modi Ji and its Benefits

Shri Ravi Murugaiah
Chairman Vasan Estates
Topic: Economical Development of Kashmir
after abolishment of Article 370

Smt.Padmini Ravichandran
Founder
Swadeshi Magazine
Topic: Women Empowerment is an
Oxygen to India

Cartoonist Varma
Topic: Lachit Barphukan and
Vallala Vanniya Maharaja : a Comparison

Millet food for Dinner
(Inspired from Modi Ji's steps to promote Millets)

SUN
02
APRIL

C P Art Centre
1, Eldams Road
Alwarpet, Chennai - 18

Time : 3:30PM

मन की बात पर विचार

"हम चर्चा करके मनकीबात मनाने जा रहे हैं"

Speech of

Shri. **A Ashvathaman**

Founder: Thoughts on MannKiBaat
State Secretary, BJP Tamil Nadu
Writer, Speaker, Worker on
#Indian_Ideology (hindutva).

Topic: Why this Forum? &
Highlights of Narendra Modi ji 's
Speech at 99th MannKiBaat

पुण्य की रक्षा के लिए जुटे सभी प्रिय स्वजनों को सादर प्रणाम।

मन–की–बात – पिछले रविवार को (26 मार्च 2023) हमारे भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 99 वें मन–की–बात में बात की। निन्यानवे महीनों से हमारे भारतीय प्रधान मंत्री हमारे देश की प्रगति के अगले चरणों के बारे में बात कर रहे हैं। वह

अनजान लोगों के बारे में;
गुमनाम नायकों के बारे में;
देशी कुत्तों के बारे में;
कृषि के बारे में;
मिट्टी के बारे में;
लोगों के बारे में
बात कर रहे हैं।

उन्होंने इस बारे में बात की है कि हमारे देश ने इस दुनिया के लिए क्या रखा है। उनके शब्दों पर विचार किया जाना चाहिए और अगली पीढ़ी तक ले जाना चाहिए। आज हम सभी एक अच्छी विषय शुरू करने के लिए एकत्रित हुए हैं। पहले ही कह चुके हैं कि 100वां मन की बात अगले महीने होने वाली है।

मन की बात की दो घटनाएं आपको बताता हूं। एक बार हमारे भारत के प्रधान मंत्री ने हमारे देश के कुत्तों के बारे में बात की थी। उसी हफ्ते मैंने एक मगजीन को इंटरव्यू दिया।

यहां तक है कि देशी कुत्तों के प्रजनक भी आमतौर पर कुछ देशी नस्लों के साथ रुक जाते हैं। उदाहरण के लिए, वे चिप्पीपारै, राजापलायम को पालना चाहते हैं मगर कोम्बै, कट्टैक्काल, मण्डै कुत्ता जैसी किस्मों को नोटिस करने में विफल रहते हैं।

यहां तक कि देशी गायों के प्रजनकों में से अधिकांश कांगेयम बैल पालते हैं। जहां तक उत्तरी तमिलनाडु का संबंध है, सभी घरेलू गायें छोटी नस्ल की गायें हैं। हम कलवारायण कुट्टई तिरुवन्नामलै कुट्टई, पुन्गनूर जैसी नस्लों का समर्थन और प्रजनन करने में विफल हैं। इसका जिक्र मैंने उस इंटरव्यू में किया था।

इसके अलावा, एम.जी.आर (MGR) के समय में, अलंगु, एक देशी कुत्ते की नस्ल विलुप्त हो गई। नतीजतन, शेष घरेलू कुत्तों की नस्लों की रक्षा के लिए सैदापेट में एक संगठन शुरू किया गया था। बीटा नामक संस्था द्वारा दायर मुकदमे के कारण कंपनी बंद हो गई थी। इस के बारे में भी मैंने उस इन्टर्व्यू में राय भी व्यक्त किया।

उसी हफ्ते हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी ने मनकीबात कार्यक्रम में देशी कुत्तों के बारे में बात की थी और मुझे बहुत खुशी हुई। मैंने इसके बारे में अपने सोशल मीडिया पर शेयर किया। इसे देखने के बाद एक भाई ने मुझसे फोन पर बात की। लड़का विरुधुनगर के पास एक गांव का है। परिवार दर परिवार वे देशी कुत्तों की देखभाल करते हैं। लड़के से बात करते समय, उनके पूर्वजों के समय में, जब कुत्ते ने बहुत अधिक पिल्लों को जन्म दिया, तो उन्हें पालना मुश्किल होगा। जितने कुत्ते पाल सक्ते उतने हम पालेंगे और बाकी पिल्लों को कुएं में डालेंगे। ऐसी प्रथा थी। क्योंकि न खरीदने वाले हैं और न पालने –पोसने के लिए पैसे हैं, तो वह परिवार चल नहीं सकता। हम ऐसी स्थिति में रह रहे थे। इतना कहकर लड़के ने और कुछ कहा।

"आज मन की बात में जब नरेंद्र मोदी ने देशी कुत्तों के बारे में बात की, तो मुझे एक दिन में 200 कॉल आए। मेरे पास जितने भी कुत्ते थे, मैंने

> "श्री. नरेंद्र मोदी शब्दों से बने नेता नहीं हैं! वह कर्मों से एक बने नेता है !"

उन्हें बेच दिया है। मैंने उन्हें अपने दोस्तों से खरीदा है और मैं अगली ब्रीडिंग के लिए एडवांस बुकिंग करने जा रहा हूं।" मोदी ने जादू कर दिया है!" लड़के ने कहा।

मन–की–बाद कार्यक्रम में भारत के प्रधान मंत्री द्वारा देशी कुत्तों के बारे में बात करने के बाद, तमिलनाडु में देशी कुत्तों के बारे में एक बड़ी जागरूकता आई है।

विवेकानंद कहते थे कि हम सभी को 'देह भक्तिश से नहीं बल्कि 'देश भक्ति' से होना चाहिए |नरेंद्र मोदी एक महान देशभक्त हैं । आम तौर पर हम में से कई लोग अपने शरीर के बारे में सोचते हैं। नरेंद्र मोदी जी जैसे महान नेता देश के बारे में सोचते हैं कि स्वयम को देश मानते हैं । यही देशभक्ति है।

इसलिए उनके मन् की बात् इस देश के सभी लोगों के बारे में बोलती है। परंपराओं की बात कर रहे हैं। उनकी करुणा गरु में बच्चा तक फैली हुई है। अंग दान के बारे में बात करता है। देशी कुत्तों की बात हो रही है। घास लहसुन की बात करती है, हमारे नरेंद्र मोदी जी ने हमें जो

सिखाया है वह यह है कि हमें स्वयम अपने शरीर पूजा करने से आगे बढ़कर राष्ट्र पूजा में आना चाहिए।

उन्होंने इस दुनिया को एक चीज सिखाई है। वह है – सब स्थान मेरा अपना स्थान हैंय सभी लोग मेरे अपने लोग हैं – अर्थात वसुधैव कुटुंबकम। वसुधैव कुटुंबकम का सही अर्थ सार्वभौमिक भाईचारे और सभी प्राणियों के परस्पर जुड़ाव के सार को समाहित करता है।

वह उन्नत तत्व जो आज G20 सम्मेलन में शुरू हो कर नरेंद्र मोदी जी द्वारा इस दुनिया को सिखाया जा रहा है। वह महान दर्शन है कि वसुधैव कुटुंबकम या सब स्थान मेरा अपना स्थान हैंय सभी लोग मेरे अपने लोग हैं। संसार की सभी समस्याओं का समाधान इसी दर्शन में है।उस दर्शन का दूसरा नाम है एकात्म मानववाद। यही नेक दर्शन है जिसने कोरोना काल में भी जब हम संकट में थे तब भी हमें 97 दिन तक फ्री वैक्सीनेशन दिया। यही वह दर्शन है जो आर्थिक स्थिति खराब होने पर श्रीलंका को मदद करने के लिए तैयार करता है। जब यूक्रेन में रूस के साथ युद्ध होता है, तो यह आशा देता है कि भारतीय राष्ट्र उस युद्ध को रोक सकता है।

नरेंद्र मोदी जी उस महान दर्शन के ब्रांड एंबेसडर हैं। कल इस दुनिया का एक बड़ा हिस्सा हमारे भारतीय दर्शन के तहत यात्रा करना

> मनकीबात कार्यक्रम India's Transformationका एक ऐतिहासिक दस्तावेज है

शुरू कर देगा। दुनिया के सभी देश – सबके शुरू कर देगा। दुनिया के सभी देश सबके लिए सब कुछ मिलना चाहिये – इस महान उद्देश्य के साथ नरेंद्र मोदी जी के रास्ते पर चलना शुरू करेंगे। राजनीति विज्ञान में कल्याणकारी राज्य की अवधारणा है। यदि कोई राष्ट्र पूर्ण कल्याणकारी राज्य बनना चाहता है, तो उसका एक ही रास्ता है । वह है, हमारा भारतीय दर्शन, जिसका अर्थ है एकात्म मानववाद। कल आने वाली अगली पीढ़ी नरेंद्र मोदी जी के शासन से समझेगी कि एकात्म मानववाद क्या है। उनके शासन को रोल मॉडल के रूप में लें और राजनीति विज्ञान के पाठ्यक्रम में अध्ययन करें। दुनिया के कई देश इस नेक राजनीतिक दर्शन को अपनाएंगे। मोदी ने इस बारे में कैसे सोचा? वे इस बात का उल्लेख करेंगे कि उन्होंने इस मामले को कैसे हैंडल किया और इसे उसी तरह से हैंडल करना शुरू करेंगे । ऐसा अवश्य होगा। मोदी जी केवल भारत के नेता नहीं हैं। दुनिया के नेता !

आखिरी मन–की– बात कार्यक्रम में वे कांचीपुरम के पास उत्तरमेरुर मंदिर के बारे में बात किये। उनका कहना है कि भारत लोकतान्त्रिक दर्शन की जननी है। वे उत्तरमेरुर में मंदिर के बारे में, वहां के शिलालेख के बारे में बात किये । वे इसे मिनी संविधान के रूप में वर्णित की।

अगर आप मालूम है या नहीं प्रधानमंत्री के मंदिर के बारे में

मैंने उस इलाके में रहने वाले अपने दोस्त को बुलाया और कहा, "भाई, नरेंद्र मोदी जी उत्तरामेरुर मंदिर के बारे में बात किये हैं। मेरे लिए उत्तरामेरुर मंदिर आने की व्यवस्था करें। आमतौर पर उस मंदिर में भीड़ नहीं होती इसलिए आपको कोई परेशानी नहीं होगी। मगर उन्होंने कहा, "भाई, बस पिछले हफ्ते की बात है, प्रधानमंत्री जी के भाषण के बाद भीड़ बहुत है. अगर आप आ रहे हैं तो मुझे पहले से बता कर आइए। यह मन–की–बात की उपलब्धि है."

> **मन–की–बात को सुनना ही काफी नहीं है । सोचना काफी नहीं है । यह जश्न मनाने के लिए कुछ है**

उन्होंने इस विचार को बदल दिया है कि भारत में केवल ताजमहल एक पर्यटन स्थल के रूप में है। हमारे नरेंद्र मोदी जी द्वारा चीनी प्रधानमंत्री को लाने और उन्हें महाबलीपुरम में विभिन्न मूर्तियां दिखाने के बाद आज महाबलीपुरम भारत में सबसे बड़ा मील का पत्थर बन गया है।

"मन–की–बात के विचारों" की इस श्रृंखला में हर महीने, हम मन–की–बात पर भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी के विचारों को इकट्ठा करने और चर्चा करने जा रहे हैं।

"यह एक अच्छा विचार है। हम मन–की–बात कार्यक्रम को और अधिक लोगों तक ले जा सकते हैं। आपको यह महान विचार कैसे आया?" कई मित्रों ने मुझसे पूछते हैं।

मेरे पास भी वही प्रश्न है। लेकिन थोड़े से बदलाव के साथ... "इस विचार इतना समय तक क्यों नहीं लगा?"

निन्यानवे महीने – हमारे भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी विभिन्न विश्व यात्राओं, विभिन्न विश्व नेताओं की बैठकों, विभिन्न कल्याणकारी कार्यक्रमों के बीच भी, निन्यानवे

महीनों से लोगों से बिना रुके बात कर रहे हैं। उनके भाषण के ये निन्यानवे महीने सिर्फ भाषण नहीं हैं। यह भारत के परिवर्तन का एक ऐतिहासिक दस्तावेज है।

हाँ। पिछले निन्यानवे महीनों में हमारा भा. रतीय राष्ट्र कितना बदल गया है, यह अगले सौ वर्षों के बाद भी शहर की बात होगी। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि ये मनकीबाद की घटनाएँ उसके लिए एक ऐतिहासिक दस्तावेज बनेंगी।

जब से मैंने देखा है कि मन–की–बात अपने 100वें शो तक पहुंचने जा रहा है, मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। इसे देश इस के बारेमें अगले सौ साल बात करेंगे। भारत के प्रधानमंत्री भारत की महिमा और भारत के लोगों की सुंदरता के बारे में कितनी खूबसूरती से बात कर रहे हैं। लोगों तक इसे ले जाने के लिए हम क्या करना चाहिये? इस भावना की रूप है इस बैठक।

इसलिए मैंने मछुआरों के साथ नाव में बैठकर समुद्र में जाकर 99वें मन् की बात् कार्यक्रम को सुना।

> हमारे प्रधानमंत्री द्वारा मन की बात कार्यक्रम में बोले गए हर संदेश के पीछे एक बड़ा संदेश होता है जिस पर इस तरह चर्चा करने की जरूरत है

इतने सारे विषयों को मैंने अकेले नरेंद्र मोदी जी के 99वें मनकीबात भाषण से लिया है तो आप समझ सकते हैं कि उनका भाषण कितना गहरा है।

नरेंद्र मोदी जी की हर हरकत और हर चाल पर नजर रखनी चाहिए। इसकी सराहना की जानी है। पालन किया जाना है। उदाहरण के लिए, उसने हमारे अनाज को पूरी दुनिया में जोड़ा है और इसलिए इस वर्ष को सारी दुनिया अंतर्राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष मना रही है।

उनके छोटे अनाज संवर्धन गतिविधियों की सराहना करते हुए हमने इस कार्यक्रम में छोटे अनाज के साथ रात्रिभोज का आयोजन किया है ताकि हम भी इसमें भाग ले सकें। मुझे उम्मीद है कि इस शो की स्वादिष्ट यादों की तरह खाने का स्वाद भी आपके दिमाग में बना रहेगा।

पिछले 99वें मन–की–बात कार्यक्रम में नरेंद्र मोदी जी ने दीऊ पर सौर ऊर्जा के आत्मनिर्भर होने की बात कही है। यह नरेंद्र मोदी के इस वादे को याद दिलाता है "भारत 2070 तक पूरी तरह से नवीकरणीय ऊर्जा बन जाएगा"।

मन–की–बात कार्यक्रम पर भारत के प्रधानमंत्री द्वारा बोले गए हर संदेश के पीछे बड़े संदेश हैं जिन पर इस तरह चर्चा करने की जरूरत है।

सौर ऊर्जा के संबंध में पद्मश्री डॉ अशोक झुनझुनवाला भारत की एक महत्वपूर्ण शख्सियत हैं! इसलिए मैं उसे लेकर आया हूं। प्रधानमंत्री ने काशी तमिल संगमम और सौराष्ट्र तमिल संगमम के बारे में बात की। काशी तमिल संगमम नामक

पुस्तक का प्रकाशन प्रधानमंत्री काशी में किये। पुस्तक के लेखक डॉ. डी.के. हरि और श्रीमती टी.के. हरि। एक अतिरिक्त जानकारी यह है कि वे सौराष्ट्र तमिल संगमम नामक पुस्तक भी लिख रहे हैं। इस पुस्तक को भी भारत के प्रधानमंत्री द्वारा प्रकाशित किया जाना है।

> प्रधान मंत्री द्वारा देशी कुत्तों के बारे में बात करने के बाद, देशी कुत्ते प्रजनकों की संख्या में कई गुना वृद्धि हुई है

कश्मीरी कमल और लैवेंडर फूल कश्मीर से निर्यात किए जाते हैं। इसके साथ ही मोदी जी ने अनुच्छेद 370 हटाने के बाद दुनिया के सामने कश्मीर की आर्थिक प्रगति की घोषणा कर रहे हैं। इसे लिख कर रख लीजिये मोदी जी के इस बारे में मन–की–बात कार्यक्रम में बोलने के बाद कश्मीर के कमल के फूल का निर्यात कई गुना बढ़ जाएगा। जैसे ही मैंने 'अनुच्छेद 370 के निरस्त होने के बाद कश्मीर की आर्थिक प्रगति' विषय के बारे में सोचा, तो मुझे तुरंत अपने मित्र रवि मुरुगय्या का चेहरा याद आ गया। ऐसा क्यों है कि वह न सिर्फ एक बड़े सफल बिजनेसमैन हैं, बल्कि कश्मीर से उनका भाव्क संपर्क भी है। वह कश्मीर गए और सुंदर गीत "तायमण्णे (धरती माँ) " की शूटिंग की। शंकर महादेवन इस गान को गाये हैं। गाने को दो भाषाओं, तमिल और हिंदी में रिलीज किया गया था। यह एक गीत है जो अनुच्छेद 370 उन्मूलन की खुशी को व्यक्त करता है। इसके बाद प्रधानमंत्री ने अंगदान की बात कही। ऐसी स्थिति जहां 39 दिन के बच्चे की मौत! अंगदान कर रहे हैं बच्ची के माता–पिता! सिर्फ बच्चे की किडनी का इस्तेमाल होता है। इसके बारे में बात करने के लिए मैंने डॉ. राजकुमार को इसलिए चुना क्योंकि उन्होंने एक बार मुझसे कहा था कि वे भारत में लीवर ट्रांसप्लांट करने वाली पहली टीम में से एक हैं।

विषय पर निर्णय लेने के बाद हमने इसके बारे में बात करने के लिए व्यक्तित्वों के बारे में सोचा। तब मेरे समूह ने कई लोगों को यह कहते हुए सुझाव दिया, 'भाई, चलो उसे बुलाओ, चलो इसे बुलाओ, वह दिए गए किसी भी विषय पर अच्छा बोल सकता है'। यह सच है कि हमारे पास भाषण व्यक्तित्व हैं जो किसी भी विषय पर अच्छी तरह से बोल सकते हैं और यहां तक कि मैं बिना किसी नोट्स के किसी भी विषय पर एक घंटे तक बोल सकता हूं। लेकिन कुछ विषय ऐसे हैं जो मेरे दिल के करीब हैं। उदाहरण के लिए, तमिल, तिरुक्कुरल, एकात्म मानवतावाद, सद्गुण आधारित जीवन, भारत के प्रधान मंत्री की लोक कल्याणकारी योजनाएँ, देश के कुत्ते – यदि आप मुझे इन सभी के बारे में बात करने के लिए कहते हैं, तो मैं मंत्रमुग्ध हो जाऊंगा और अपने दिल से कई घंटे बोलूंगा। इसी तरह, प्रत्येक व्यक्तित्व के पास ऐसे विषय होते हैं जो उनके दिल के करीब होते हैं।

मैंने सोचा था कि इन विषयों पर बोलने वाले भी दिल से बोलें, ठीक वैसे ही जैसे मनकी. बात कार्यक्रम में प्रधानमंत्री दिल से बोलते हैं

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने उपलब्धि हासिल करने वाली भारतीय महिलाओं के बारे में बोलते हुए एक लाइन कही और उस लाइन ने मुझे वास्तव में प्रभावित किया। महिला सशक्तिकरण हमारे देश की प्राण शक्ति है यह प्रधानमंत्री जी की कही गई पंक्ति है । उस एक पंक्ति में हमारे भारत के प्रधानमंत्री ने हमें वैदिक काल से भारत में महिलाओं को दिए जाने वाले महत्व को भी समझाया। उस विषय पर बोलने के लिए पद्मिनी रविचंद्रन को चुना है, जो स्वदेशी नामक एक गुणवत्तापूर्ण साप्ताहिक पत्रिका चलाती हैं।

> **अगर हम और 50 साल तक भी बात करें तो भी उन्होंने जो किया उसके बराबर हम प्रशंसा के शब्द नहीं कह पाएंगे**

प्रधानमंत्री, जो इस्लामी आक्रमणकारियों के खिलाफ लड़े महान नायक लाचित बोड़फुकन के बारे में बात किये। उनका कहना है कि जब उनके बारे में निबंध प्रतियोगिता हुई तो 45 लाख निबंध प्राप्त हुए थे। यह एक गिन्नस रिकॉर्ड

> **मैंने सोचा था कि इन विषयों पर बोलने वाले भी दिल से बोलें, ठीक वैसे ही जैसे मनकीबात कार्यक्रम में प्रधानमंत्री दिल से बोलते हैं**

है। जब नरेंद्र मोदी जी ने मन–की–बात में यह जानकारी साझा की, तो मुझे तिरुवण्णामलै पर शासन करने "वल लाला वन्निया महाराजा" की नरेंद्र मोदी जी ने मन की बात में यह जानकारी – साझा की, तो मुझे तिरुवण्णामलै पर शासन करने वल लाला वन्निया महाराजा की याद आई। उन्होंने ही इस्लामिक आक्रमणकारियों के खिलाफ लड़ते हुए अपने प्राणों की आहुति दी थी। वे लसिथ पोरबुकन के समकक्ष व्यक्तित्व थे। लेकिन अगर असम में लाचित बोड़फुकन पर निबंध प्रतियोगिता होती है तो 45 लाख लेख सृजित होते हैं। लेकिन तमिलनाडु में वल लाला महाराजा के बारे में कोई नहीं जानता। इस्लामी आक्रमणकारियों के खिलाफ लड़ने वाले इन दो व्यक्तित्वों की तुलना करना उपयुक्त है। हमने कार्टूनिस्ट वर्मा को इस पर बोलने के लिए आमंत्रित किया है। कार्टूनिस्ट वर्मा को कई लोग कार्टूनिस्ट के रूप में जानते हैं। वह इतिहास के शौकीन हैं। आज आप उनका यह रूप देखने जा रहे हैं जो आमतौर पर नहीं पता होता है।

कुछ लोगों की शिकायत है कि भारत के प्रधानमंत्री मीडिया से नहीं मिलते। मीडिया नेताओं के लिए लोगों से मिलने का माध्यम है।मगर हर

महीने इस थरह जनता से अपने मन की बात कहने वाले प्रधानमंत्री को क्यों मीडिया से मिलना जरूरी है?

तमिलनाडु के लोग समझेंगे कि मैं क्या कह रहा हूं। यहां कई ऐसे नेता हैं जो केवल शब्दों के आधार पर बने हैं। साठ साल की राजनीति में शब्दों से नेता गढ़ने का काम चल रहा है।

हमारे नरेंद्र मोदी शब्दों से बने नेता नहीं हैं मगर एक नेता हैं जो अपने कार्यों से बने हैं।

उसने जो किया है उसके लिए पूरी प्रशंसा उनको अभी तक नहीं मिला। अगर हम और 50 साल तक भी बात करें तो भी उन्होंने जो किया उसके बराबर हम प्रशंसा के शब्द नहीं कह पाएंगे। ऐसे व्यक्ति के मन–की–बात को सुनना ही काफी नहीं है। सोचना काफी नहीं है। यह जश्न मनाने के लिए कुछ है। जैसा कि मैंने पहले ही कहा था कि मन–की–बात भारत के परिवर्तन का एक ऐतिहासिक दस्तावेज है! इसे मनाया जाना चाहिए।

आइए मन–की–बात मनाते हैं!

धन्यवाद !

जय भवानी!

सौर ऊर्जा और नवीकरणीय ऊर्जा के प्रति भारत की प्रतिबद्धता

मैं अपनी मन की बात वार्ता में सौर ऊर्जा और नवीकरणीय ऊर्जा के महत्व को सामने लाने के लिए हमारे प्रधानमंत्री को धन्यवाद देना चाहता हूँ।

Speech of

Padma Shri Prof. **Ashok Jhunjhunwala**

IIT Madras

Topic: India's Commitment towards Solar Power & Renewable Energy

यह आज भारत और दुनिया के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है हम पिछले 150 वर्षों से इतना जीवाश्म ईंधन जला रहे हैं – कोयला, पेट्रोल, डीजल और गैस – की धरती गर्मी हो रही है और यह ग्लोबल वॉर्मिंग धीरे–धीरे पृथ्वी को खत्म कर रही हैस

इस ग्लोबल वॉर्मिंग में सबसे ज्यादा योगदान किसका है ? यदि हम आंकडों की सावधानीपूर्वक जांच करें, तो हम पाते हैं कि सबसे अमीर 1: कुल ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में लगभग 50 : योगदान देता है, जबकि दुनिया में सबसे नीचे के 50 : का योगदान 1: से भी कम है। इसके अलावा लगभग हर देश में ऐसा हो रहा है भारत में भी एक सबसे अमीर 1: है जो 50 : उत्सर्जन में योगदान देता है जबकि सबसे गरीब व्यक्ति 50 : 1: से कम योगदान देता है।

और जलवायु परिवर्तन की घटना जैसे बाढ़ सूखा होने पर सबसे अधिक पीड़ित कौन होता है यह हमेशा सबसे गरीब होता है यहां तक कि दिसंबर 2001 में चोरी अधिक बारिश से चेन्नई की कुछ सड़कों पर लगभग 1 हफ्ते तक पानी भर गया था और कई लोगों को अपने घरों से बाहर निकलने के लिए नाव या ट्रैक्टरों को इस्तेमाल करना पड़ा था।

4अगर हम देशों को देखें,

। –" ग्लोबल वॉर्मिंग में प्रति व्यक्ति योगदान के मामले में भारत विश्व में केवल 103वें स्थान पर है। तो एक मायने में ग्लोबल वार्मिंग के लिए हम जिम्मेदार नहीं है।

ठ. लेकिन ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कुल योगदान की दृष्टि से

भारत का विश्व में तीसरा स्थान है। और जैसे–जैसे हमारी जीडीपी बढ़ेगी हम कुछ वर्षों में ग्लोबल वॉर्मिंग (चीन के पीछे) में दूसरे सबसे बड़े योगदानकर्ता बन जाएंगे।

हमने पिछले दस वर्षों में बहुत कुछ किया है, लेकिन यह तो शुरुआत है।

तो हम इसे पसंद करें या ना करें हम ग्लोबल वार्मिंग में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं और अगर हम इसे उल्टा नहीं करते हैं तो सबसे ज्यादा नुकसान होगा। इसलिए हमारे पास जीवाश्म ईंधन का उपयोग छोड़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। हमें वैकल्पिक ऊर्जा की जरूरत है। भगवान ने हमें सूरज और हवा दी हैं । सूर्य में अनंत ऊर्जा है। यह पूरी दुनिया में चमकता है। हवा भी पर्याप्त ऊर्जा देती है । पिछले 30 वर्षों में, हमने ना केवल बिजली उत्पादन के लिए सौर फोटोवोल्टिक का उपयोग करना सीखा है, बल्कि बिजली उत्पादन के लिए पवनचक्कियों का उपयोग करना भी सीखा है। जब हमने करीब 30 साल पहले शुरुआत की थी, तब लागत बहुत अधिक थी प्रदूषण फैलाने वाले कोयले से पैदा होने वाली बिजली से करीब 20 गुना ज्यादा। लेकिन आज सौभाग्य से सौर और पवन से बिजली उत्पादन की लागत कोयले की तुलना में कम है। सौर और पवन बिजली उत्प. ादन लागत लगभग 2.50 प्रति यूनिट है। दूसरी ओर नए कोयला संयंत्र 3.50 से 4 प्रति यूनिट बिजली का उत्पादन करते हैं। गैस से बिजली पैदा करने की लागत ₹15 प्रति यूनिट है । और पेट्रोल और डीजल से प्रति यूनिट ख30 खर्च होंगे। इसके बावजूद हम डीजल जनरेटर का उपयोग जारी रखते है।

तो स्वभाविक सवाल यह है कि क्या भारत अपनी जरूरत के लिए पर्याप्त सौर और पवन पैदा नहीं कर सकता है । आज और कल हमें जितनी भी सौर और पवन ऊर्जा की जरूरत है उसे पैदा करने के लिए हमारे पास काफी जमीन है । समस्या यह है कि सौर और पवन 10.7 उपलब्ध नहीं है । सूरज चमकता है और हवा तब चलती हैं । जब भगवान की इच्छा होती हैं जरूरी नहीं कि जब हमें जरूरत हो । इसके विपरीत कोयले, गैस और डीजल से बिजली उत्पादन को हमारी मांग के अनुसार नियंत्रित चालू और बंद किया जा सकता है। नवीकरण ीय ऊर्जा जैसे सौर और पवन की मांग के साथ आपूर्ति का मिलान करने के लिए हमें बैटरी की तरह ऊर्जा भंडारण की आवश्यकता होती है । वैकल्पिक रूप से हमारे पास हाइड्रॉलिक स्टोरेज हो सकता है। जहां हम पानी को ऊंचाई तक पंप करते हैं तब हमारे पास अतिरिक्त शक्ति होती हैं और जरूरत पड़ने पर बिजली उत्पन्न करने के लिए पानी को गिरने देते है। दुर्भाग्य से हम इस तरह के भंडारण में बहुत अधिक ऊर्जा खो देते हैं । और ऐसे पेंट भारत में उतने उपलब्ध नहीं है दूसरी ओर बैटरी है अभी भी महंगा है । और जब हवा और सबसे सभी बिजली को स्टोर करने के लिए उपयोग किया जाता है तो उनकी लागत आसानी से तिगुना चौगुनी हो सकता है । सौभाग्य से हमें सभी उत्पन्न बिजली को सस्टोर करना है। लेकिन केवल अतिरिक्त

सावधानीपूर्वक डिजाइन और उपयोग प्रबंधन के साथ हम भंडारण की प्रभावी लागत को लगभग 2.50 प्रति ❑ तक कम कर सकते हैं स इस प्रकार यह संभव है कि हम सौर और पवन से बिजली उत्पन्न करें और इसे लगभग 5 प्रति यूनिट की लागत पर आपूर्ति और मांग के अनुरूप स्टोर करें, जो आज हम भुगतान करते है। इसके लिए केवल लिलोन बैटरी के उचित डिजाइन और प्रबंधन की आवश्यकता है , और आज हम आईआईटी मद्रास रिसर्च पार्क में यह कर रहे हैं।

हमारे प्रधान मंत्री ने दुनिया के लिए प्रतिबद्ध किया है कि भारत 2070 तक नेट–शून्य राज्यों तक पहुंच जाएगा।

तो क्या हमारे लिए जीवाश्म ईंधन के उपयोग को बंद करने और भंडारण के साथ सौर और पवन को अपनाने में कोई अड़चन है? दुर्भाग्य से , लागत प्रभावी सिलिकॉन आधारित सौर सेल बढ़ाने की तकनीक आज केवल चीनी कंपनियों के पास ह । दुनिया की कोई भी सौर कंपनी प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकती है। मुझे याद है कि मैंने 2017 की शुरुआत में इस पर गौर किया था, जब मैं बिजली और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री पीयूष गोयल का प्रधान सलाहकार था। मैंने पाया कि संयुक्त राज्य अमेरिका में एक मध्यम आकार की कंपनी फर्स्ट सोलर थी, जो सीडीटाई सौर कोशिकाओं (सिलिकॉन आधारित सौर कोशिकाओं के बजाय)का उत्पादन कर रही थी, और उनकी कीमतें चीनी कंपनियों के करीब की। मैंने पीयूष जी से कहा कि हमें भारत को पहला सोलर मिलना चाहिए। उन्होंने मुझे इसे अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। मैं गया और उनसे मिला और उन्हें भारत आने और विनिर्माण स्थापित करने के लिए मनाने की कोशिश की लेकिन वे अनिच्छुक थे। उन्होंने मलेशिया में प्लांट लगाना पसंद किया। चेन्नई लौटने के बाद भी मैं उनका पीछा करता रहा। सौभाग्य से कुछ साल पहले उन्होंने भारत आने में योग्यता देखी और अब चेन्नई में यह संयंत्र स्थापित किया है। संयंत्र लगभग तैयार हैं और कुछ महीनों में उत्पादन शुरु हो जाएगा। वे प्रतिवर्ष 3ळ्का उत्पादन करेंगे। हमें उन्हें 10 गुना अधिक उत्पादन करने के लिए प्राप्त करने की आवश्यकता है। हम आईआईटी मद्रास और आईआईटीएम में रिसर्च पार्क उनके साथ काम कर रहे हैं और उनके साथ अनुसंधान एवं विकास भी करना चाहते हैं ताकि ऐसे हो सके।

ली आयन बैट्री सेल के लिए उतनी ही खराब है, जो अक्षय ऊर्जा के भंडारण को डिजाइन करने और विकसित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह चीनी कंपनियों की सेल है जिनकी कीमत दुनिया में सबसे कम है य हालांकि कुछ कोरियाई और जापानी कंपनियां हैं और कुछ यूरोप में है , जो किफायती सेल बनाती है। हम अभी भी अधिकांश सोलर सेल और बैटरी सेल का आयात कर रहे हैं। यहां तक की जब हम संयंत्र लगाने के लिए तैयार होते हैं थंबी हम तकनीक के लिए पूरी तरह से दूसरों पर निर्भर होते हैं।

हम इसे पसंद करें या नहीं , हमें इन दोनों क्षेत्रों में भारत में अनुसंधान एवं विकास की आवश्यकता है , ताकि हम आने वाले वर्षों में प्रौद्योगिकी का नेतृत्व कर सके। सौभाग्य से दुनिया में इन क्षेत्रों में काम करने वाले वैज्ञानिकों का एक बड़ा प्रतिशत दक्षिण एशियाई मूल का है और भारत में ही उच्च गुणवत्ता वाले वैज्ञानिक है। उद्योग और इन वैज्ञानिकों को सबसे अधिक लागत प्रभावी बनने के लिए इन तकनीकों को डिजाइन करने विकसित करने और निर्माण करने में नेतृत्व करने के लिए नवाचार करने के लिए मिलकर काम करने की आवश्यकता है।

दुर्भाग्य से हम भारत में त्–व करने और इसे व्यवसायीकरण तक ले जाने में अच्छा सा एक रिकॉर्ड नहीं रखते हैं वैज्ञानिक अक्सर कागजात (और कभी कभी पेटेंट) बनाने में व्यस्त रहते हैं। भारत में बड़े उद्योगों को जोखिम से बचना होगा । हम आकार के उद्योगों को प्रोत्साहित करना चाहिए । सरकारी नौकरशाही अनुसंधान एवं विकास को नियंत्रित करने में अधिक रूचि रखती है। और मैं आपको बता दूं की यह कभी काम नहीं करता है। वे अक्सर तत्काल परिणाम चाहते हैं और अनुसंधान एवं विकास श्रमसाध्य हैं और इसमें समय लगता है।

आईआईटीएम रिसर्च पार्क में हम व्यवसायिक रूप से व्यवहार्य प्रौद्योगिकियों का उत्पादन करने के लिए उद्योग और शिक्षा जगत को एक साथ काम करने की कोशिश कर रहे हैं । हमने पिछले 10 वर्षों में बहुत कुछ किया है लेकिन यह तो शुरुआत है अपने पास पिछले एक दशक में 300 कंपनियों को इनको वेट किया और ₹40,000 करोड़ रुपए का मूल्य बनाया।

मुझे साहू नवीकरणीय ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन पर वापस आने दे हमारे प्रधानमंत्री ने दुनिया के लिए प्रतिबद्ध किया है कि भारत 2017 तक नेत्र 0 राज्य प्राप्त करेगा इसका मतलब यह है कि 3रू30 तक हम ज्यादातर नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग करेंगे और कोयले गैस पेट्रोल और डीजल जैसे जीवाश्म ईंधन का बहुत कम उपयोग करेंगे हमें वैज्ञानिकों और उद्योग जगत को और भी कड़ी मेहनत करने की जरूरत है और पहले भी इस मुकाम तक पहुंचने की कोशिश करनी चाहिए। हमारा मानना है कि यह संभव है अगर हम सही काम करना सीखें और खुद को इसके लिए समर्पित करें।

एक और क्षेत्र है, कि हम कमजोर हैं। मुझे विस्तृत करने दो । हमने सीखा है कि बड़े सौर और पवन संयंत्र कैसे स्थापित किए जाते हैं और आज हमारे पास 85ळॅकी स्थापित क्षमता है। हमारा 2030 तक त्मके 500ळॅ तक पहुंचने का लक्ष्य है। हम वहां पहुंचेंगे। लेकिन

हमने इसे लगभग 60000 घरों को बिजली देने के लिए स्थापित किया, प्रधानमंत्री की योजना के तहत प्रत्येक घर में बिजली पहुँचाने के लिए।

यस बी यह शुरुआत होगी। अगर हमें 2047 तक और ई पर मुख्य रूप से निर्भर रहना है, तो हमें 5 से 6 गुना अधिक स्थापित करना पड़ सकता है। लेकिन अभी तक हमारी सफलता बिजली उत्पादन करने वाले बड़े सौर संयंत्रों में ही है, जहां तकनीक एक ऐसे चरण में पहुंच गई है, जहां निवेश पर प्रतिफल है। एक तकनीक तभी फलती फूलती है जब सकारात्मक आर ओ आई होता है। हमें हर तकनीक को इस मुकाम तक ले जाने की जरूरत है। जब तक ऐसा नहीं होगा, यह हमेशा सब्सिडी पर निर्भर रहेगा और कभी नहीं पनपेगा... दुर्भाग्य से हमने रूफटॉप और विकेंद्रीकृत सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए ऐसा नहीं किया है, खासकर चोटे बिजली उत्पादन के लिए। यहां हम अपने लक्ष्य से काफी नीचे हैं। हमें यहां कुछ अलग चाहिए, जिससे ग्राहकों को फायदा हो। हमें जनरेशन के साथ–साथ स्टोरेज को भी मिक्स करना होगा। हमें इससे लागत प्रभावी बनाना होगा और विकेंद्रीकृत सौर को व्यावसायिक रूप से । हमने सोर डीसी पर दुनिया में नेतृत्व किया था। सौर पैनल केवल डीसी बिजली का उत्पादन करते हैं बैटरी डीसी पावर को स्टोर और दे सकती है और हम सीधे डीसी का उपयोग कर सकते हैं। हमने यह भी पता लगाया कि रोशनी और पंखे अधिक ऊर्जा कुशल होते हैं, जब हम उन्हें सीधे डीसी का उपयोग करते हैं। इलेक्ट्रॉनिक्स वैसे भी सभी डीसी है। हम 60 प्रतिशत ऊर्जा बचाते हैं और लागत लगभग आधी है। हमने इसे 2014 तक विकसित कर लिया था और इन सभी के निर्माण के लिए स्टार्टअप बनाए। मैंने इसे अपने घर में लगाया था और जब दिसंबर 2015 में चेन्नई शहर में इतनी बड़ी बाढ़ आई और पूरे शहर में कई दिनों तक अंधेरा रहा तो मेरे घर में कभी बिजली नहीं गई। मेरे पास छत पर केवल 125 वाट का सोलर पैनल था। लेकिन इससे मेरे पंखे और लाइट चलती रही और मैं अपना सेल फोन और लैपटॉप चार्ज कर सका।

हम इसे पूरे भारत में ले जाना चाहते हैं। लेकिन हमसे पूछा गया कि हम डीसी पावर की बात कैसे कर सकते हैं, जब पूरी दुनिया एसी का इस्तेमाल कर रही है। दुनिया में और किस ने ऐसा किया है? सौभाग्य से पीयूष जी ने मुझे राजस्थान के रेगिस्तान में 4000 घरों में सोलर डीसी लगाने के लिए कहा, जहां कोई बिजली केवल नहीं गया।हमने इसे सफलतापूर्वक किया। आईआईटीएम को असम, मणिपुर और जम्मू कश्मीर में पहाड़ी और दुर्गम क्षेत्रों को बिजली देने के लिए कहा गया था। हमने इसे लगभग 60000 घरों को बिजली देने के लिए स्थापित किया है ,प्रधानमंत्री की योजना के तहत प्रत्येक घर में बिजली पहुंचाने के लिए। प्रतिष्ठानों को जम्मू कश्मीर के लिए सर्वश्रेष्ठ होने का पुरस्कार भी मिला। लेकिन दुर्भाग्य से आईआईटी मद्रास को पूरा भुगतान भी नहीं किया गया है।

उसी समय, सौर – डीसी अवधारणा, जिससे सम्मानित भी किया गया था। 2016 में आईईईई द्वारा दुनिया में सबसे अच्छे उत्पाद के रूप में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, हमारे एमएमआरई केलिए स्वीकार्य नहीं था समय आगे बढ़ गया है और भारत ने नेतृत्व करने का एक और अवसर उको दिया है एमएनआरई को इसका समर्थन करना होगा।

भारत ने ऐतिहासिक रूप से प्रकृति की पूजा की है। हमने खुद को प्रकृति का हिस्सा माना और कभी भी इसका शोषण करने या

खैरै उसका अतीत। भारत को और भी बहुत कुछ करने की जरूरत है। हमें केवल नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग करने के लिए निरंतर नवाचार करना होगा। हमारे उत्पादों को न केवल अवध ाारणा जीवाश्म ईंधन को दूर करना है, बल्कि इन हरित उत्पादों को हमारे लोगों के लिए और यह अर्थ पूर्ण बनाना है , उनके लिए लागत प्रभावी होना है और बड़े पैमाने पर निर्मित और तैनात किए जाने की आवश्यकता है। ध्यान दें कि जीवाश्म ईंधन का उपयोग केवल बिजली के लिए ही नहीं है, बल्कि हीटिंग और कूलिंग के लिए, अधिकांश परिवहन के लिए, इन सभी के उर्वरक, एल्युमीनियम, स्टील और सीमेंट बनाने के लिए भी है। हमें भारतीय के लिए भारत के पास विकल्प है, जो सौर और पवन ऊर्जा का उपयोग करेगा। हमें इन सभी विकल्पों के लिए प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए झील की जरूरत है, जैसे कि डिपो में और आरओआई है संदर्भ में हर मामले में ग्रीन की जरूरत है। यह वास्तव में संभव है अगर हम अपने युवाओं को इन्हें विकसित करने के लिए प्रेरित करें आईआईटी मद्रास रिसर्च पार्क ने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए अक्षय ऊर्जा और प्रौद्योगिकियों में भारत को अग्रणी बनाने का लक्ष्य लिया है और जो भी बाधा होगी हम उसे नहीं रोखेंगे। हम जानते हैं कि हम सफल होंगे।

समाप्त करने से पहले, मैं एक अन्य मुद्दे को सामने लाना चा. हता हूं । पिछले 150 वर्षों में दुनिया ने अपने ऊर्जा उपयोग में लगभग 100 गुना वृद्धि की है और हम इसे अब भी बढ़ा रहे हैं। जैसे–जैसे भारत की जीडीपी बढ़ेगी हम भी ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करेंगे। जैसा कि मैंने शुरुआत में कहा था, आज हम ऊर्जा की प्रति व्यक्ति खपत के मामले में दुनिया में 103 वे स्थान पर है। हम शीघ्र 50 में शामिल होंगे। इसका मतलब होगा कि दुनिया और भी अधिक खपत करेगी और हम जीएचजी उत्सर्जन में कहीं अधिक योगदान देंगे। अगर ऐसा होता है, तो कोई तकनीक मदद नहीं करेगी और दुनिया को कोई नहीं बचा सकता है। भारत ने ऐतिहासिक रूप से प्रकृति की पूजा की है। हम खुद को प्रकृति का हिस्सा मानते थे और कभी भी इसका शोषण या हावी होने के बारे में नहीं सोचा। हमने सादा जीवन जीना पसंद किया। हम जानते थे कि अधिक और अधिक खपत हमें खुश नहीं करती हैं । हमारे साथ चीजें गलत हो गई है और आज हम धन, शक्ति और बढ़ी हुई खपत के पीछे भाग रहे हैं। यदि ऐसा ही चलता रहा, तो प्रलय निश्चित है–और हजारों वर्षों में नहीं बल्कि अगली कुछ पीडियों में। हमें अपनी जड़ों की ओर लौटने की जरूरत है। हमें अपने जीवन को सरल बनाने और कम में खुश रहने की जरूरत है। वही दुनिया को बचा सकता है। गांधी जी ने 100 साल पहले जो कहा था उसे याद करें, "दुनिया के पास हर किसी की जरूरत के लिए पर्याप्त है, लेकिन उनके लालच के लिए नहीं।" भारत को अपने विचार से दुनिया का नेतृत्व करने की जरूरत है। तभी हमारी पृथ्वी जीवित रह सकती है ।मुझे उम्मीद है कि पीएम की मन की बात बात हमें वहां पहुंचने के लिए प्रेरित कर सकती है।

काशी तमिल संगमम और सौराष्ट्र तमिल संगमम

क्या आप में से कोई जानता है कि भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी ने टीवी और कई अन्य सोशल नेटवर्किंग साइटों को क्यों छोड़ दिया है और विशेष रूप से रेडियो पर यह कार्यक्रम कर रहे हैं?!

पच्चीस साल पहले, भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी ने हिमालय में ध्यान किया और फिर एक चाय की दुकान पर भोजन करने के लिए तलहटी का दौरा किया।

तब चाय वाले ने पहले मिठाई दी और कहा कि यह मिठाई खाओ और फिर नरेंद्र मोदी जी ने उन्हें नाश्ता कराया।

Speech of

Shri. **D.K.Hari** & Smt **D.K.Hema Hari**

Founders, Bharath Gyan

Topic: Kashi Tamil Sangamam and Saurashtra Tamil Sangamam

जब नरेंद्र मोदी ने पूछा कि वह मुझे मिठाई क्यों दे रहे हैं, तो चाय दुकानदार ने कहा कि मैं मिठाई इसलिए दे रहा हूं क्योंकि हमारे वाजपेयी के नेतृत्व में भारत के स्वर्ण युग में पोखरण में परमाणु परीक्षण के सफल समापन का जश्न मनाया जा रहा है.

यहां तक कि हिमालय की तलहटी में एक पहाड़ी गांव में एक चाय की दुकान का मालिक भी इस तथ्य को समझता है कि अगर किसी संदेश को प्रसारित करने की आवश्यकता है, तो यह केवल रेडियो सेवा के माध्यम से ही किया जा सकता है। इसलिए मोदि जी ने रेडियो पर मन–की–बात कार्यक्रम का शो कर रहे हैं।

अश्वत्थामन ने हमारे देश के कुत्तों के बारे में प्रधान मंत्री के भाषण के परिणामों क्या है हमें मार्मिक रूप से बताये। उन्होंने तमिलनाडु में उत्तर मेरुर शिलालेख के बारे में प्रधानमंत्री के भाषण पर प्रकाश डाला और कहा कि उसके बाद वहां यात्रियों की भीड़ बढ़ गई थी। मैंने अपनी भारत ज्ञान वेबसाइट पर उत्तरामेरुर मंदिर पर एक वृत्तचित्र प्रकाशित किया है।

रेडियो के माध्यम से ही गांव, मछुआरा समुदाय और आदिवासियों तक यह जानकारी पहुंच सके, इसका उन्होंने विजन लिया है और आज उन्होंने 99वां मन–की–बात प्रोग्राम रिकॉर्ड किया है।

लेकिन उन्होंने अब तक जितने भी कार्यक्रम किये हैं उनमें से किसी में भी राजनीति की बात नहीं की है। इसके बजाय, वह लोगों और देश की उपलब्धियों के बारे में अधिक बात किये हैं।

और हमारे भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी ने तमिल और काशी संगमम और इसकी परंपरा के बीच समानता के बारे में बात की है।

इसी तरह, काशी और तमिलनाडु के बीच संबंध कई संतों द्वारा जारी रखा जा रहा है।

सौ साल पहले हमारे महाकवि सुब्रह्मण्य भारतियार ने तमिल और काशी को मिला दिया था। उससे 2500 साल पहले

आदि शंकर ने तमिल और काशी की जोडे थे। यदि हम अपने चेन्नै के सेंट जॉर्ज किले को सेंट जॉर्ज कहते हैं, तो प्रत्येक जाति के लिए एक संरक्षक सीट है। जॉर्ज उस ब्रिटिश जाति की संरक्षक सीट है जिसने हम पर शासन किया। इसी तरह, तिरुवल्लुवर हमारे तमिलनाडु की संरक्षक सीट बन रहा है। लेकिन तमिल साहित्य का प्रथम संरक्षक महर्षि अगस्त्य काशी के हैं। अगस्त्य को तमिल सिद्धारों में पहला सिद्धर माना जाता है। उनका जन्म काशी में हुआ था।

अगस्त्य में शुरू हुआ नाता भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी तक जारी है, जो आज वाराणसी के सांसद हैं। अगस्त्य से शुरू करते हुए, अश्वत्थामन ने कहा, आदि शंकराचार्य और भारती का संबंध, यहां के चेट्टियार समुदाय द्वारा स्थापित संबंध, इन सभी को बहुत से लोग जानते हैं। पसुम्पोन मुत्तुरामलिंग देवर और डॉ. राधाकृष्णन के बीच के संबंध के बारे में कम ही लोग जानते हैं। मदन मोहन मालवीय ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। इसके दूसरे अध्यक्ष डॉ. राधाकृष्णन थे।

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में दिए गए सबसे लंबे भाषणों में से एक हमारे पासुम्पोन मुत्तुरामलिंगथ देवर का था। उन्होंने तीन घंटे तक हिंदू धर्म के बारे में बात की। यह सब उस विश्वविद्यालय के दस्तावेजों में है। ऐसी तमाम जानकारियों का जिक्र हमने 'कासी तमिल संगमम' किताब में किया है।

कर्नाटक संगीत है। डॉ हेमा हरि एक कर्नाटक गायिका हैं। डी. के. पट्टाम्माल के प्रत्यक्ष शिष्य। कर्नाटक संगीत त्रयी में मुत्तु स्वामी दीक्षितार के हाथ में जो वीणा थी वह काशी में गंगा से आयी थी। इसी तरह, माँ तमिल का अभिवादन गीत की रचना करने वाले मनोनमणियम सुंदरम पिल्लै के गुरु काशी के थे। तो हमारी तमिल माँ के अभिवादन गीत का काशी से संबंध है। हमने इस किताब में ऐसे 200 से ज्यादा रिश्तों के बारे में लिखे हैं। भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी और तमिलनाडु के राज्यपाल आर.एन. रवि ने हमें यह मौका दिया। साथ में उन्होंने हमारा सम्मान दिया है।

काशी तमिल संगम ने भी कार्यक्रम का आयोजन कर पुस्तक के प्रकाशन की तिथि तय की और उसके बाद यह निर्णय लिया गया कि हम इस पुस्तक को लिखेंगे। हमें दिए गए सीमित समय में हमने इस पुस्तक को यथासंभव तीन भाषाओं में पूरा किया है। हिंदी अंग्रेजी तमिल।

क्या यहाँ कोई मुझे बता सकता है कि तमिलनाडु का अंतिम राजा कौन था? तंजावूर पर शासन करने वाले सारबोजी राजा तमिलनाडु के अंतिम राजा थे। इसी तरह काशी पर शासन करने वाले अंतिम राजा मराठा राजा थे। अन्य शहरों और काशी के बीच एक बड़ा अंतर है। यह काशी में 86 घाट हैं। मराठा राजाओं ने ही उन 86 घाटों की मरम्मत की थी।

मराठा राजाओं का संबंध तमिलनाडु से भी है और काशी से भी और उनका संबंध त्रिकोणीय संबंध है। यह मराठा ही थे जिन्होंने तमिलनाडु और काशि के बीच आध्यात्मिक तीर्थ मार्ग को बनाया और परिष्कृत किया। यह देखिए, मराठा भारत के पश्चिम में हैं, लेकिन उन्होंने दक्षिण में तमिलनाडु और उत्तर में काशी के बीच एक यात्रा मार्ग बनाए रखा है। हमारे भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी ने हमारे लिए एक अद्भुत नारा बनाया हैरू एक भारत श्रेष्ठ भारत है। नरेंद्र मोदी जी बिना कुछ कहे काशी तमिल संगमम, सौराष्ट्र तमिल संगमम जैसे कार्यक्रमों के जरिए लोगों को इस बात से पूरी तरह अवगत करा रहे हैं कि एक भारत श्रेष्ठ भारत है।

नरेंद्र मोदी से पहले अगथियार, तिरुवल्लुवर, भारती, पसुम्पोन् मुथुरामलिंग देवर काशी और तमिलनाडु के बीच संबंध स्थापित कर चुके हैं।

विशेष रूप से काशी शब्द का अर्थ प्रकाश होता है।

काशी हम जानते हैं। तमिलनाडु में काशी नाम के कई नगर हैं। शिवकाशी, तेनकासी, कांचीपुरम को दक्षिण काशी के नाम से भी जाना जाता है। आइए देखें कि और कहां काशी है। कश्मीर से परे, चीन के पश्चिमी भाग में खसकर नामक एक कस्बा है। उस कस्बे का असली नाम काशी गिरी है। नाम का अर्थ है चमकता हुआ पहाड़। पूरे तमिलनाडु में काशी विश्वनाथ की पूजा की जाती है। काशी नाम की कई नगरियां हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि यहां काशी से लाए गए शिवलिंगों की पूजा की जाती है। एक बार जब काशी से लाए गए शिवलिंग को बैलगाड़ी में लाया जा रहा था तो बैलगाड़ी एक जगह पर रुक गई। उस जगह से जाने से इनकार कर दिया। उस जगह पर शिवकाशी का गठन किया गया था। हमारे चेन्नै में भी काशीमेडु नाम का एक इलाका है।

इसी तरह हम सौराष्ट्र के संबंध में 250 पृष्ठों की एक किताब लिख रहे हैं और वह श्री नरेंद्र मोदी जी के आदेश के अनुसार चल रही है जिसमें हमने ऐसी ही कई बातों के बारे में बात की है कि सौराष्ट्र तमिल संगमम समारोह में पुस्तक का विमोचन किया जाएगा। उसके बाद मुझे उम्मीद है कि वह हमें इस "मन–की–बात" शो में इसके बारे में बात करने का एक और मौका देंगे। फिर हम इसके बारे में विस्तार से बात करते हैं।

हमारी 'भारत ज्ञान' वेबसा. इट पर 500 से अधिक लघु फिल्मों का निर्देशन किया है और 700 से 800 लेख पूरे किए हैं। उनके सभी कार्यों को सोशल मीडिया पर लोगों द्वारा पढ़ा और लाभान्वित किया जा सकता है।

मुझे इस सब के बारे में बात करने का अवसर देने के लिए धन्यवाद!

Speech of
Shri.**Dr Rajkumar**
Founder: Lifeline Groups of Hospital
Topic: Organ Donation; New Scheme of Narendra Modi Ji and its Benefits

भारत के प्रधान मंत्री ने अंग दान के बारे में बड़ी जाग. रूकता पैदा की है

इस्से पहले अश्वथामन बहुत सुंदर ढंग से भाषण थिये थे। उनका तमिल व्यक्तित्व और सिद्धांतों का प्रतिपादन बहुत अच्छा था। अपने भाषण में उन्होंने श भारतीय कुत्तों की नस्लोंश के बारे में बड़ी खूबसूरती से बात की। देशी कुत्तों के बारे में उनकी बातें उतनी ही मनोरंजक थीं जितना ऑस्कर विजेता गीत श्नाटू नटूश। यह आश्चर्यजनक था कि उन्होंने इतने सिद्धांत एक साथ बोले।

उन्होंने मुझे मनकीबात का 99वां मन–की–बात एपिसोड भेजा था और "अंग दान" के बारे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा जिक्र किया गया पोर्शर अलग से भेजा। मैंने मन–की–बात भाषण को पूरा सुना। प्रधानमंत्री मोदी मुझे हिंदी पढ़ा रहे हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि उन्होंने मुझे फोन में – एक गांव में एक गांव में एक किसान रह था दृ पाठ पडाया नहीं। मैं 'मनकीबात' सुनकर धीरे–धीरे हिंदी सीख रहा हूं। अश्वत्थामन जी भी इसका एक कारण है।

अश्वत्थामन जी ने मार्च महीने की मन–की–बात भाषण के बारे में बहुत अच्छे तरीके से बताया जिससे हर कोई सहमत हो सकता था। अश्वथामन जी द्वारा किया गया यह कार्य बहुत बडिया है। मैं आने वाले श्मन–की–बात चिन्तन बैटक" में उनकी यथासंभव मदद करूंगा।

आज इस कार्यक्रम के माध्यम से मुझे महान व्यक्तियों से मिलने का अवसर मिला है।

यहां बोलते हुए, प्रोफेसर अशोक जूनजुनवाला ने कहा कि 2015 की चेन्नई बाढ़ के दौरान, सिर्फ उनके घर में प्रकाश चालू था। उन्होंने कहा कि ऐसा इसलिए है क्योंकि वह सौर ऊर्जा का इस्तेमाल करते हैं। इसलिए मैं उनसे यहां एक अनुरोध करना चाहता हूं। पिछली बार की तरह अगर चेन्नै में बाढ़ आती है तो हम सब आपके घर आकर रहेंगे।

यहाँ मुझे एक बात कहनी है। मैं मनोनमणियम सुंदरम पिल्लै का पड़पोता हूं। लेखक हरि ने मुझे उनके बारे में बहुत कुछ बताया जो मैं उनके बारे में नहीं जानता था। उसके लिए मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

यहां विस्तार से बात करने के लिए मैं जरा अनिच्छुक हूं। जैसा कि मैं बोलता हूं, लगता है कि लेखक हरि ने कई और किताबें लिख कर पूरी कर देंगे। इतनी गति से इतनी सारी पुस्तकें लिखना उनकी प्रतिभा है।

मैंने वंचिनाथन और भारतियार के बारे में एक छोटा संग्रह लिखा है। इसे लिखने में मुझे तीन साल लगे। लेकिन जब उनसे पूछा गया कि लेखक हरि ने बहुत ही कम समय में इतनी सारी किताबें लिखी हैं, तो उनका सिर झुक कर प्रणाम करने कि मन चाहता है। यह एक प्रचंड शक्ति है।

जब मैं यह समाचार सुनता हूं कि काशी तमिल संगमं पर एक पुस्तक लिखने का निर्णय लिया गया है और यह निर्णय लिया गया है कि इसे इतने दिनों के भीतर लिखा जाना चाहिए और फिर श्री हरि को लेखक के रूप में तय किया गया है, तो मेरे मन में एक बात आती है। मगर यह इतना आश्चर्यजनक है कि एक मरीज सर्जरी कराने का फैसला कर सकता है और इस तारीख को करना है वह भी फैसला कर लेता है मगर डॉक्टर कौन होगा यह बात बादमें तय करना जैसा है। फिर भी इतने कम समय में उन्होंने इस पुस्तक को बड़े करीने से लिखा है।

इस समारोह से मैंने सीखा कि छोटे तथ्य बड़ी चीजें बना सकते हैं। मन–की–बात कार्यक्रम में अंगदान पर भारत के प्रधान मंत्री बात करना हमारे लिए बहुत प्रेरणादायी है। क्योंकि लाखों लोग फोन पर फोन कर अंगदान की मांग करते रहते हैं। कितने लोग डॉक्टर से पूछते हैं मुझे किडनी चाहिए, मुझे लीवर चाहिए। लेकिन यह देखकर बहुत दुख होता है कि लोगों में देने की भावना बहुत कम है। ज्यादा कहने की जरूरत न्हीं है, जब मैं यहां बात कर रहा हूं तब भी कई मौतें बिना अंग उपलब्ध हुए हो रही हैं।

1995 में मुझे भारत में पहली लीवर सर्जरी करने का अवसर मिला। मुझे लगता है कि शायद इसीलिए अश्वत्थामान जी ने मुझे इस विषय पर बोलने के लिए आमंत्रित किये हैं। उस अवधि के दौरान हम अंग दाताओं के लिए हाथ पांव मार रहे थे। हम उन लोगों से अंग प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं जो पूरी तरह से ब्रेन डेड हो चुके हैं। लेकिन ऐसा करने की कोशिश करते समय, एक असामान्य स्थिति थी जहां लोग अस्पताल के बाहर जमा हो जाते और हमें देखकर हंगामा करते थे। उन्हें आभास हो जाता है कि हम किडनी चुरा रहे हैं। लेकिन अब हमारे भारत के प्रधान मंत्री जी ने अपने मन–की–बात भाषण के माध्यम से एक बड़ी जागरूकता पैदा की है।

पहले अंगदान के बारे में पूछने पर लोग परेशानी में पड़ जाते थे

अमृतसर में सुखबीर सिंह संधू जी और सुप्रीत कौर जी नाम के जोड़े के घर एक बच्ची का जन्म हुआ है। उन्तालीस दिनों में बच्चा दिमागी तौर मृत हो जाता है। जब बच्चे के माता–पिता ने उसके अंगों को दान करने का फैसला किया, तो बच्चा इतना छोटा था कि केवल उसके गुर्दे ही इस्तेमाल किए जा सकते थे। माता–पिता ने इस संतोष से बच्ची के अंग दान कर दिए कि हमारी बच्ची के अंग दूसरे बच्चे के शरीर में रहने की खुशी हमारे लिए काफी है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने उन्हें फोन कर बधाई दी। जैसा कि अश्वथामन ने कहा, प्रधान मंत्री मोदीजी सिर्फ बोल्ने वाल नहीं हैं मगर काम के आद्मी हैं।

महान तिरुवल्लुवर के अनुसार,
"अहंकार ममकार को, जिसने किया समाप्त ।
देवों को अप्राप्य भी, लोक करेगा प्राप्त ॥६

अर्थात निस्वार्थ लोगों को विकसित किया जाना चाहिए। मैं चालीस साल से देख रहा हूं, जैसा कि विवेकानंद ने कहा, दृढ़ संकल्प वाले युवावों को अंग–दान करने आगे आने चाहिए। क्योंकि युवा शरीर के अंग हैं जिन्हें आसानी से बच्चों और वयस्कों के अनुकूल बनाया जा सकता है। जो

मुझे विश्वास है कि प्रधानमंत्री के भाषण के बाद लोगों में अंगदान के प्रति जागरूकता बढ़ेगी

लोग सास–बहू की लड़ाई वाले सीरियल देखते हैं उन्हें और आगे बढ़कर सोचना चाहिए।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने अमृतसर पति पत्नी युगल जोडि द्वारा अपनी बच्ची के अंग दान करने की घटना के बारे में बाहरी दुनिया को सूचित करके इस अंग दान के बारे में लोगों में एक बड़ी जागरूकता पैदा की है। जब उस छोटे से बच्चे के माता–पिता अंगदान करते हैं तो सभी सोचते हैं कि हम करें तो क्या होगा। और लोगों के मन में ये नहीं आता है कि क्या हम सीरियल देख सकते हैं, क्या 100 एमएल शराब मिल सकती है, क्या टीवी पर क्रिकेट देख सकते हैं, – ये सब सोचविचार के बिना वे सोचेंगे कि कहीं किसी बच्चे की मौत को हम किसी तरह रोक सकते हैं? इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि इस 99वें मन–की–बात भाषण ने यह सोचने में बहुत मदद की है कि एक जीवन भी बचाया जा सकता है। मुझे बहुत खुशी है कि मन–की–बात कार्यक्रम ऐसे बदलावों में योगदान दे रहा है। लोगों को यह समझना चाहिए कि एक शरीर चार लोगों को जीवन और दो लोगों को दृष्टि प्रदान कर सकता है।

हमारे राज्य में ज्ौड।ब शराब की दुकानों को बंद करने के लिए पहला कदम उठाया जाना चाहिए। क्योंकि अकेले दक्षिण भारत में हर महीने 1540 लोग ज्ौड।ब की वजह से लिवर क विफलता से मर जाते हैं। लेकिन लिवर की उपलब्धता बहुत कम होती है। अगर 5000 का लिवर रिजर्व है, तो 100,000 लोग लिवर डोनेशन का इंतजार कर रहे हैं। हमारे राज्य के ज्ेंउंब स्पुनवत ैजवतमे लीवर के लिए प्रतीक्षा सूची को बढ़ते रहने की कारण बनता है। इन शराब दुकानों को किसी भी तरह से बंद करने की कार्रवाई होनी चाहिए।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने दो बदलाव किए हैं। पहले, भारत में एक राज्य में रहने वाले लोग केवल उसी राज्य में अंग दान कर सकते थे और उस राज्य में सर्जरी कर सकते थे। लेकिन आज हमारे भारत के प्रधान मंत्री जी ने एक ऐसी स्थिति पैदा कर दी है जहां कोई भी भारत में कहीं भी सर्जरी कराने जा सकता है। इसे बहुत लोगों लाभान्विथ होने वाले हैं । दूसरे, जैसा कि संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा बताया गया है, उन्होंने केवल पैंसठ वर्ष से कम आयु के लोगों के लिए अंग प्रत्यारोपण की प्रणाली को बदल दिया है और यह उपचार सभी पात्र लोगों को उपलब्ध कराया गया है। इस बात को उन्होंने मन–की–बात शो में साफ कह दिया था। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि इससे कई लोगों के अंग निकल रहे हैं और कई लोगों की जान बचाया जा रही है।

अनिवार्य रूप से, हमारे दिमाग को बदलने के लिए केवल एक शब्द लगता है। हमारे भारत के प्रधान मंत्री जी ने उस शब्द को इस 99 वें मन–की–बात कार्यक्रम में कहा है कि । मुझे यहां बोलने का अवसर देने के लिए मैं अश्वथामन जी को धन्यवाद देना चाहता हूं। यहां बैठे सभी लोगों का शुक्रिया। जय हिन्द। भरत माता की जे!

Article 370
की समाप्ति के बाद कश्मीर का आर्थिक विकास।

Speech of
Shri **Ravi Murugaiah**
Chairman Vasan Estates

Topic: Economical Development of Kashmir after abolishment of Article 370

मन की बात चर्चा मंच के अध्यक्ष श्री. श्री अश्वथामन, श्री अशोक झुनझुनवाला आईआईटी मद्रास, जो सदस्य यहां मेरे साथ बोल रहे हैं, और हमारे डॉ. श्री राजकुमार, संस्थापक, लाइफलाइन अस्पताल, जिन्होंने यहां किकबॉक्सिंग के साथ बहुत अच्छी तरह से बात की।

कासी तमिल संगम ने ही नहीं, बल्कि काशी, रामेश्वरम और तमिलनाडु के संबंधों के बारे में एक बहुत ही सरल पुस्तक में एक महान उपलब्धि हासिल करने वाले महान व्यक्ति ने भी बात की। प्रिय डीके हरि सर।

कश्मीर में भारत सरकार द्वारा लाए गए आर्थिक परिवर्तनों को देखने से पहले, मुझे यह कहना होगा कि श्री अश्वथामन ने मुझे इस विषय के लिए क्यों चुना। इस घटना का हर विषय और चर्चा करने वाले लोगों को उस विषय के दिल से करीब होना चाहिए। अश्वत्थमान का मत था कि प्रधानमंत्री द्वारा जिन विषयों पर चर्चा की गई है, उसमें उसके प्रति जागरूकता की भावना का समावेश होना चाहिए।

उनकी यह पुस्तक भारत के माननीय प्रधान मंत्री द्वारा प्रकाशित की गई है! इस समारोह में मेरे बाद जो बोलने वाली हैं वे स्वदेशी पत्रिका की संस्थापक श्रीमती पद्मिनी रविचंद्रन हैं! श्री कार्टूनिस्ट वर्मा वललाल वन्निया पुराण के बारे में बात करने जा रहे हैं। एक बार अंग्रेज जीनियस बर्नार्ड शॉ से एक पेंटिंग दिखाकर और उनकी राय पूछी, वह पेंटिंग हेलेन ऑफ ट्रॉई है। हेलेन द ग्रेट रॉयल ग्रीक मूल की है।।

थोड़ी देर बाद, बर्नार्ड शॉ ने पूछा कि क्या यह वही चेहरा है जिसने हजारों जहाजों को डूबो दिया और हजारों लोगों को नष्ट कर दिया। इसका मतलब यह नहीं है कि वे खुद खूबसूरत हैं, बल्कि जहां खूबसूरती है वहां खतरा भी है और यही बात हमारे कश्मीर पर भी लागू होती है।

भगवान ने पंचभूतों की रचना की। भूमि पंचभूतों में से एक है। इसलिए हम धरती को माता कहते हैं। यद्यपि परमेश्वर ने अन्य ग्रह बनाए, उसने पृथ्वी पर जीवन को अंकुरित किया।यह पृथ्वी पर ही विभिन्न जीव रहते हैं। इसलिए हम धरती को बहुत मूल्य मानते हैं। धरती एक प्रभावशाली ग्रह है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि धरती माता ही भारत है... पृथ्वी स्वयं ईश्वर की प्रतिनिधि है।

. वे ऐसी धरती की बात करने लगे जैसे कि मैंने कोई पीएच. डी पूरी कर ली है.. आप पूछेंगे कि किसी और के पास जाए बिना धरती माता मेरे पास कैसे आ गई.. धरती मां मेरे पास एक व्यक्ति के रूप में आई जिसने 30 दिनों में अपनी मां को खो दिया.. पृथ्वी भगवान द्वारा बनाई गई है। भाषा मानव निर्मित है। इसलिए पृथ्वी पहले है और बाद में भाषा है।

ऐसी धरती कब भगवान बन गई। जब मैंने रियल एस्टेट का कारोबार शुरू किया और लेआउट तैयार किया, तो हमने

पर्यटन के मामले में स्विट्जरलैंड को टक्कर देगा कश्मीर

कारगिल युद्ध में शहीद हुए मेजर सरवनन के नाम पर एक सड़क बनाई.फिर हमने अन्य सभी सड़कों के नाम उन इलाकों के नाम पर रख दिए जिन्हें पाकिस्तान ने अपने कब्जे में ले लिया था।क्योंकि इतिहास सभी को पता होना चाहिए।

थाई मन्नेष एक किताब है जिसे मैंने लगभग 24 साल पहले कारगिल युद्ध के कारण हुई पीड़ा के कारण लिखा था। 29 जून 2019 को हमने कश्मीर के डल झील के सर सिनारी द्वीप में थाई मन्ने पुस्तक की पंक्तियों को एक गीत के रूप में रिकॉर्ड किए। फिर 36 दिन बाद यानी 5 अगस्त को उस समय भारत के संविधान के अनुच्छेद 370 की विशेष विशेषताओं को अयोग्य घोषित कर दिया था।

यही वह क्षण है जब एक छोटे लड़के की इच्छा पूरी हुई और भरत धरती माता बन गईं। मैं आपको बताता हूं कि मैंने उन्हें कैसे धन्यवाद दिया। किसी भी गीत का पहला खंडन वही गीत के अंत में होता है। लेकिन मैंने अपना विचार बदल दिया। क्योंकि जैसे ही मैं डाल झील से लौटा मैंने दो बातों के बारे में मन में सोचने लगा।

1.मैंने जो पहला गाना गाया वह मंत्र बन गया। उस मंत्र को एक महान गीत में बदल देना चाहिए।

2.दूसरा हमें अपनी भारत मिट्टी के लिए धरती माता को धन्यवाद देना है। इसलिए मैंने गाने के बोल बदल दिए।

धरती माता, धरती माता हार न मानें आसमान में बरौनी की तरह शिखर हमारा है।

शुरुआत में मैंने वही लिखा था।

लेकिन भारतमाता के प्रति आभार होने के कारण मैंने वही गाने को इसी तरह बदल दिया।

धरती माता धरती माता है। आप मेरे भगवान हैं। कश्मीर के बर्फीले पहाड़ों में गा रहे हैं।

मैंने ऑडी(आषाढ़) महीने में गाया था। अवनी (श्रावण) के भीतर अनाया द्वारा आदेशित सेना द्वारा

वहाँ आग भी नहीं होती है। मायम?(जादू)? या मातृ स्नेह।।

फिलहाल यह गाना यूट्यूब वेबसाइट पर तमिल भाषा में उपलब्ध है लेकिन यह गाना तेलुगू हिंदी कन्नड़ और चार भाषाओं में रिलीज होने जा रहा है।

आगे हमें यहां आर्थिक विकास की बात करनी है, जम्म.ू–कश्मीर के राज्यपाल श्री मनो चिन्ना ने औद्योगिक विकास के लिए 28,400 करोड़ रुपये का निवेश किया है। उन्होंने कहा कि इससे न केवल सामाजिक–आर्थिक विकास को गति मिलेगी, बल्कि इससे 4 लाख लोगों को रोजगार भी मिलेगा। इसके अलावा प्रधानमंत्री ग्राम सभा योजना के तहत 17, 601 ाउ सड़कें बिछाई गई हैं।

इसके अलावा, न्यू वनिहाल माइंस और चेनाई नस्री माइंस को पूरा कर लिया गया है और खोल दिया गया है। जम्मू–कश्मीर के 2022–23 के बजट में 35,571 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। साथ ही केंद्र सरकार ने 1,42,000 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। खान विभाग के अनुसार, जम्मू–कश्मीर के रासी जिले के सलाल और हैमाना में 59 लाख टन लिथियम खोज की गई है। मैं ऐसा क्यों कह रहा हूं कि हमने लगभग 12 मिलियन डॉलर में 680 टन लिथियम खरीदा है। लेकिन अब हमें वह सब खर्च करने की जरूरत नहीं पडेगा।

लिथियम आज कश्मीर में पाया जाता है। भारत माता की देन देखिए।

साथ ही कश्मीर में 250 किसानों वाली एक संस्था के जरिए कमल के तने उगाते हैं और इससे जुड़े 110 उत्पादों का निर्यात करते हैं, ये तीनों ही कर रहे हैं। क्योंकि अनुच्छेद 317 के निरई होने से सड़क मार्ग से माल का निर्यात करना बहुत आसान हो गया है।इसके जरिए निवेश भी ज्यादा मिलेगा। हमारा कश्मीर दुनिया की पांच सबसे खूबसूरत जगहों में से एक है, इसलिए उस सुंदरता की रक्षा करके हम दूसरे देशों से अपने देश में निवेश आकर्षित कर सकते हैं।

इसके अलावा हमारी केंद्र सरकार खेल प्रतियोगिताओं को बढ़ावा देती है और अब चुनाव में पंचायत नेताओं का चयन किया जाता है, जिससे वहां की समस्याओं का समाधान आसानी से हो जाता है। इसके अलावा केंद्र सरकार की 890 योजनाओं को लागू किया गया है। शारदा मंदिर जम्मू–कश्मीर में बना हुआ है। इसके अलावा 391.8 करोड़ ¬।¶ से जम्मू–कश्मीर में निवेश के रूप में आए हैं।

एक्सपो 2020 में कई सौदे किए गए हैं। ¶•चव 2020 में कई सौदे किए गए हैं। अंत में एक ऐसा मंच बनाया,और मैं इस अवसर पर भारत माता के बारे में बात करने का मौका बनाया, प्यारी तमिल माता के पश्चातापी पुत्र और तमिलनाडु को खुद की जान से ज्यादा प्यार करनेवाला श्री. अश्वत्थामामन जी को मैं हृदय से आभार व्यक्त करना चाहता हूं, जिन्होंने मुझे मातृभूमि से प्रेम करने वाले भारत के प्रधानमंत्री श्री. नरेंद्र मोदी की आवाज के बारे में बोलने का अवसर दिया।

महिलावों की प्रगति ही हमारे देश का प्राण शक्ति है

Smt.**Padmini Ravichandran**
Founder: Swadeshi Magazine
Topic: Women Empowerment is an Oxygen to India

आज मुझे दिये हुवा शीर्षक है, "महिलावों की प्रगति ही हमारे देश का प्राण शक्ति है". यहाँ बहुत सा पुरुष है, सबको पता है की महिला ही घर को और देश को एक जिव शक्ति, प्राण शक्ति है, यह भारत वर्ष के महिलावों को मिला वरदान हैद्यद्य महाकवि भारतियार बोले थे, "जनम दिये माँ पैदा हुये बेटी सबको एक तरह देकना श्रेष्ट है", उसी तरह देश को माँ की स्थान देकर सम्मान देना बी हमारे ही देश में हैद्यद्य

इस पूरा भूमि में, देश को माँ का सम्मान देने वाले लोग हिन्दुवों और युद्ध ही हैद्यद्य हमारे देशवासी समुद्रा पार करके कही देश विदेश में काम करते समय बी, सभी कब हमारे मातृभूमि के पास लौटेंगे की उमीढ पर ही हैद्यद्य समय समय पर मातृभूमि के पास आ जाते ही हैद्यद्य

यह भारत वर्ष में सभी महिलावों को शक्ति के रूप में ही देख रहे हैद्यद्य हमारे देश में नदियों और पर्वतों को महिलावों और स्त्री के रूप में ही धारण करथे है और सम्मान करते हैद्यद्य उसी तरह हमारे देश की महिलावों भी, उन्हें एक महिला रूपरेखा के अन्दर नहीं देकतेद्यद्य उन्हें वो एक शक्ति के रूप में ही धारण करते हैद्यद्य वो उन्हें एक बेटी, पत्नी, बहन, माँ, मित्र के संजोहिक रूप में उनको धारण करके, कर्त्तव्य निरबारित करते हैद्यद्य

स्वामी विवेकानंद उनके किताब, "पुरभ और पश्चिम" में बोले थे, "विदेश में सब महिलावों उनको महिला जैसे ही धारण करते है, उसके हिसाब से ही वे उनको जीरो साइज में रकना ही सोचते हैद्यद्य परंतु, भारत वर्ष में सभी नारियों और महिलावों उनको उनके धारण के बाहर एक शक्ति के रूप में संयोजिक करते हैद्यद्य"

आज हमारे महिलावों चिकित्सा क्षेत्र, तकनीकी क्षेत्र और कई और क्षेत्र में चमत्कार कर रहे है उसे कोई अस्वीकार नहीं कर सकतेद्यद्य सभी को पता है की यह ६० करोड़ महिलावों के सहायता के बिना भारत वर्ष इतनी श्रेष्ट नहीं हो पायेगी, महिलावों की इस सम्मति बहुत महत्त्वपूर्ण है।

भारत की सबसे बड़ी संपत्ति "परिवार" है। परिवार कहे जाने वाले जीवन के उस तरीके का पुरुष और महिला दोनों बहुत खूबसूरती से पालन कर रहे हैं और उसकी प्रशंसा कर रहे हैं।

महिलावों की धन–सम्मंदि के कारण ही वो इस तरह की प्राण शक्ति की अवस्था नहीं हासिल कर सकते हैद्यद्य भारत में परिवार ही सबसे महत्त्वपूर्ण है, पुरुष और महिलावों परिवार के जिन्दगी में जोड़कर, उसे निम्नलिखित करते हैद्यद्य

जैसे ही हमारे पिता घर भनाथे है, थो भी उसे हम माँ के घर ही मानते हैद्यद्य और जाते है उसके निकास में, हम बोलते नहीं है की हम हमारे पिता के घर जाते हैद्यद्य उसी तरह ही है हमारे देश में माँ की स्थान की सम्मान, उसके कारण यह है की हम हमारे परिवार की संरचना वैसे करे हैद्यद्य हमारे लोग विदेश जाने से भी, हमारे धरम, संस्कृति, समपालन को न छोड़कर, परिवार के उन्नति में उसको पालन करते हैद्यद्य

ऐसे ही हमारे महिलावों परिवार और धन सम्पृधि को धो आंखों जैसे भावित उनके सही उलंगन उसमे डालकर उसे प्रभावित करते हुहे ही उनको एक प्राण शक्ति मानते हैद्यद्य में समजता हूँ की मेरे इस विचार को आप सभ लोग यहाँ अमोधित करेंगेद्यद्य

में एक लेखक हूँद्यद्य परंतु हमारे अश्वथामान जी ने मुझे यहाँ जरूर भाषण देना है बोलकर बुलाया थाद्यद्य इसलिए ही मैंने आज यहाँ आप सबके सामने एक काकज की सहायता से हूँद्यद्य वे बहुत बड़े भाषण देने वाले है और एक महत्वपूर्ण आदमी है मुझे भी यहाँ भाषण देने बुलाया हैद्यद्य एक काकज की सहायता के बिना मुझे यहाँ भाषण करना नहीं आताद्यद्य

यहाँ घर को और राज्य को संभालने वाली थो महिला ही है, पुरुष की अनुमद्धि से।। यहाँ सभी पुरुषो को पता है की, महिला एक शक्ति है, महिला एक संपूर्ण है।। आप ही सोचिये फिर किस लिये मुझे यहाँ इस अवसर पर यहाँ बैठक कर रक्का है।। सभी पुरुषों को महिला यदि स्त्री ही, उनके पीछे से गति कर रही है ।।

भारत के सभी महिलावों एक ही वरदान मांगनी चाहिये, वह यह है की पुनर्जन्म हो थो भारत की माँ के गोध में ही होनी चाहियेद्यद्य वैसे ही हमारे देश की महिलावों बी सोचते हैद्यद्य हम कहीं विदेशी देश में देख रहे है की, केलिन्डर जैसे आज का दिन पूरा हो गया, वही चिंतन देख रहे हैद्यद्य उनको महत्वपूर्ण सोच नहीं है, हमें थो छोटे से उमृ में ही हमारे बुसरों से कही विषय सुनने से, हम कही विषय को समज सकते हैद्यद्य परंतु विदेशी देश के महिला वैसे नहीं है, उनको तरह– तरह के विषय समाज में नहीं आता हैद्यद्य हमारे देश में महिलावों अष्टवधानी के जैसे, एक ही समय पर कई प्रकार के विषय को समझकर उसे इस्तेमाल भी कर सकते हैद्यद्य

हमारे देश के महिलावों

लचित् बोरबुक्कन और वलाल वन्निया महाराजा की तुलना

सभी को नमस्कार, अश्वत्थामा जी ने मुझे कुछ दिन पहले प्रधान मंत्री के वॉयस ऑफ माइंड कार्यक्रम पर एक चर्चा कार्यक्रम में लसिथ बोरबुक्कन के बारे में बात करने के लिए आमंत्रित किया। लेकिन मैं एक कार्टूनिस्ट हूं, बातूनी नहीं, लेकिन अश्वत्थामा जी और मैंने फोन पर घंटों इतिहास की बातें की हैं, फिर हमने होयसला सम्राट वीर वल्लला तृतीय के इतिहास के बारे में भी बहुत बात की है, उसके आधार पर उन्होंने मुझे लसिथ से तुलना करने के लिए कहा बोरबुक्कन वल्लाल वन्निया राजा।

लचित् बोरबुक्कन, ऐसा लगता है कि यह नाम मुगल इतिहास का अध्ययन करते समय कहीं सुना गया था, मैंने पढ़ा है कि मुगल सेना कितनी भी कोशिश कर लें, वे असम क्षेत्र को पूरी तरह से नहीं जीत सके, वे उस क्षेत्र को क्यों नहीं जीत सके, मैंने नहीं पढ़ा कि कौन मुगलों को वहीं रोक दिया, क्योंकि मुझे ऐसा इतिहास नहीं बताया गया,

Cartoonist **Varma**

Topic: Lachit Barphukan and Vallala Vanniya Maharaja : a Comparison

दरअसल भारत में 300 Spartans की तरह हॉलीवुड की हजारों कहानियां हैं और ये सारा इतिहास हमारे प्रधानमंत्री के जरिए ही हमारे सामने आना शुरू हुआ है.

उसके बाद के मुगलों।मैंने आक्रमणकारियों के बारे में पढ़ा जिन्हें नवाब और फिर अंग्रेज कहा जाता था और मैंने अपना रास्ता बदल लिया।

हाल ही में भारत के प्रधान मंत्री की आवाज सुनने के बाद ही मेरा ध्यान नायक की ओर गया और तभी मैंने पूरी तरह से जांच श्रुरू कर दी कि लचित् बोरबुक्कन कौन है।

जब किसी ने वेबसाइट पर जाकर इस लचित् बोरबुक्कन को सर्च किया तो सबसे पहला लेख यही आया कि प्रधानमंत्री मोदी असम के इतिहास को तोड़–मरोड़ कर पेश कर रहे हैं और असम के लोगों को हिंदू बनाने की कोशिश कर रहे हैं. यह कितना हास्यास्पद है? क्या पीएम मोदी का श्शेर को श्शेर कहना गलती है? गहन अध्ययन के बाद ही मुझे समझ में आया कि यह किस प्रकार का इतिहास था, और मैं समझ गया कि आज जो नागरिकता संशोधन अधिनियम आया है, उसका कारण 17वीं श्शताब्दी में रहने वाले लचित् बोरबुक्कन थे। क्योंकि जिस तरह लसिथ पोर बुकान ने मुगलों के आक्रमण को रोका था, उसी तरह आज भी असम के लोगों को बंगाल से मुसलमानों के अवैध प्रवास का सामना करना पड़ रहा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि लोग अभी भी लचित् पोर भुकन की आत्मा को ढो रहे हैं।

लचित् बोरबुक्कन ने एक बार नहीं दो बार नहीं बल्कि लगातार 17 बार मुगल सेना के आक्रमण के खिलाफ लड़ाई लड़ी है, हम सभी को 17 बार भारत को लूटने वाले डाकू गजनी मुहम्मद की कहानी सुनाई गई है, लेकिन लचित् बोरबुक्कन का इतिहास क्यों नहीं जिसने भारत को हराया मुगल सेना 17 बार? हाँ, आप मुगलों की उत्पत्ति का इतिहास कैसे बता सकते हैं? इसके अलावा, हजारों की मुगल सेना बुखान की एक छोटी सी सेना से कैसे हार सकती है? इसके अलावा, लसिथ एक राजा भी नहीं था, वह एक साधारण मंत्री था, और एक साधारण मंत्री लसिथ ने इतनी बड़ी मुगल सेना को एक छोटी सी सेना से हरा दिया। इतना अधिक कि यह एक रक्षात्मक युद्ध है न कि आक्रामक युद्ध।

इस तरह लड़ने के बाद लसिथ लगातार 17 लड़ाइयाँ जीतता है, उसकी आखिरी लड़ाई में लसिथ के लगभग 10000 सैनिक मारे जाते हैं। जैसे ही मुगल जीत की ओर बढ़ते हैं, अहोम सैनिक आत्मविश्वास खो देते हैं और पीछे हट जाते हैं। तेज बुखार के कारण अपूर में भाग नहीं लेने वाले लचित् कोहाटी किले के ऊपर से देखते हैं, मुगल गनबोट ब्रह्मपुत्र नदी को पार करके दूसरी तरफ पहुंचने वाले हैं, और अगर वे जमीन पर पैर रखते हैं, तो गौहाटी किला गिर जाएगा, तब लचित्, बुखार में पड़ा हुआ, तुरंत युद्ध के मैदान में प्रवेश करता है, एक छोटी नाव में चढ़ता है और वीरतापूर्वक मुगल नाव की ओर जाता है, लचित युद्ध के मैदान में प्रवेश करता है। सभी कांडा अहोम सैनिक, प्रेरित और फिर से ऊर्जावान होकर, आगे बढ़ते हैं लचित मुगल सेना का सामना करने के लिए, और ब्रह्मपुत्र नदी एक संकीर्णता के लिए आता है, जैसा कि फिल्म 300 स्पार्टन्स में, स्पार्टन्स ने एक संकीर्ण मार्ग का उपयोग करके जीत हासिल की, लचित् ने उस अवसर का लाभ उठाया जहां मुगल सेना की बड़ी नावें संकीर्ण नदी चौनल पर लौटने के लिए संघर्ष कर रही थीं, और सभी बड़ी नावों को अपनी छोटी नावों से नष्ट कर दिया। और एक बार फिर 17वीं बार मुगल सेना का दम घुटने लगा।

दरअसल, भारत में 300 स्पार्टन्स की तरह हजारों हॉलीवुड कहानियां हैं. ये सारा इतिहास हमारे प्रधानमंत्री के जरिए ही हमारे सामने आना शुरू हुआ है. इतने सालों तक हम पर राज करने वाले तमाम राजनेता जब बात करना शुरू करेंगे, तो ये शुरू हो जाएंगे. अमेरिका और यूरोप जैसे विदेशी इतिहास के साथ वे स्थानीय इतिहास की बात नहीं करते, करेंगे भी तो मुगल शेखी बघारेंगे।

उत्तर पूर्व में लसिथ पोर भूकन का इतिहास असमिया लोगों का नायक है और दूसरी ओर छत्रपति शिवाजी उत्तर भारतीय लोगों की वीरता और देशभक्ति का कारण हैं, लेि कन हम दक्षिण भारतीयों के लिए? एकल पहचान जैसी कोई चीज नहीं है, यानी इतिहास में हमने कभी किसी की पहचान नहीं की, इसलिए ऐसा लगता है कि यहां तमिलनाडु में तमिलों को एक अलग जाति के रूप में खड़ा करने का अलगाववादी प्रयास हो रहा है। लेकिन वास्तव में हमारे पास असंख्य नायक भी हैं जिनमें से एक है जो उन सभी का अग्रणी है जैसे लचित्, छत्रपति शिवाजी आदि। वास्तव में वह भारत के पहले हिंदू साम्राज्यवादी परिसंघ के निर्माता थे। वह होयसला सम्राट तृतीय वीरा वल्लाल वन्निया राजा हैं।

वीरा वल्लालर रहते थे13–1410वीं शताब्दी में दक्षिण भारत में अभूतपूर्व अराजकता थी, चोल कमजोर हो गए थे, और पांड्यों के बीच उत्तराधिकार के युद्ध के कारण सभी साम्राज्य पतन के कगार पर थे।उस समय, वीरवल्लर ने होयसला साम्राज्य पर अधिकार कर लिया, और उस समय वह दक्षिण भारत का एकमात्र सम्राट था।, राजा कांबली भी एक बड़ा सिरदर्द था, दूसरी ओर उसके दामाद पांड्यों के बीच उत्तराधिकार का युद्ध था, इस संदर्भ में उत्तराधिकार का युद्ध अपने चरम पर था। जब वीरा वल्लर ने सुंदर पांड्यन को पांड्य देश की ओर मदद करने के लिए अपनी सेना ली, तो खिलजी की सेना ने दक्षिण भारत में प्रवेश किया, उसके सेनापति मलिक कपूर को देवगिरी राजा द्वारा होयसला राजधानी में दिखाने के लिए।बर्बरीक खिलजी की सेना ने द्वार समुद्र का सफाया कर दिया, बात सुनकर होयसालों ने जल्दबाजी में अपनी सेना को द्वार समुद्र की ओर ले आए और बरगाई में सब कुछ हाथ से निकल गया खिलजी की सेना के साथ एक अन्य तरीके से समझौता करने वाले वीरा वल्लर ने अपने बेटे को संपार्श्विक के रूप में भेजा। खिलजी की सेना, फिर मलिक कपूरिन जो पंडी देश में गया, सेना ने पूरे तमिलनाडु को नष्ट कर दिया और यह एक अलग कहानी है।

जिस प्रकार परमाणु बम हमले के तुरंत बाद जापान ने अपने देश की मरम्मत की, उसी प्रकार वीरा वल्लर ने

> मैंने पढ़ा है कि मुगल सेना कितनी भी कोशिश कर ले असाम क्षेत्र को पूरी तरह से जीत नहीं सकती थी, लेकिन मैंने यह नहीं पढ़ा कि वे इस क्षेत्र को क्यों नहीं जीत सके और मुगलों को वहां किसने रोका। वह महान योद्धा लाचित बोड़फुकन हैं

अपने देश को फिर से पुरानी स्थिति में ला दिया। इस बीच, होयसल साम्राज्य अपने चारों ओर के सभी छोटे राजाओं को जीतकर एक महान साम्राज्य के रूप में विकसित हो रहा था। अगला झटका मुहम्मद बिन तुगलक था। वह आया और एक बार फिर से दक्षिण भारत को तबाह कर दिया, शक्तिशाली वीरा वल्लालर ण्ण मुख्य रूप से क्षत्रिय मार्शल नैतिकता के कारण मुस्लिम आक्रमणकारियों का सामना करने में असमर्थ था।

महाभारत में हजारों साल पहले युद्ध की नैतिकता, हाल ही में हमारे हिंदू राजाओं द्वारा पालन किए जाने तक, अभी भी योद्धा युग में गहराई से निहित है, कमर के नीचे हमला नहीं करना चाहिए, एक योद्धा को केवल दूसरे योद्ध ा से लड़ना चाहिए, सूर्यास्त के बाद लड़ना बंद कर देना चाहिए, महिलाओं, इस्लामिक राजाओं के पास युद्ध के कोई नियम नहीं थे जैसे कि बच्चों पर हमला न करना, अपनी पीठ पर दौड़ते हुए योद्धा पर हमला न करना और यह आश्चर्य की बात नहीं है कि पवित्र योद्धा योद्धा उनकी अनैतिक और क्रूर सेना के सामने हमला नहीं कर सके। केवल वीरा वल्लारा ही नहीं, बल्कि कांबली देव, जो अपने समकालीनों में रहते थे और वीरा वल्लारा का विरोध करते थे, ने इसी तरह के धर्म का पालन किया।

अपनी मृत्यु से पहले, कांबली देव ने कुरसप को तीसरे वीरा वल्लारा के पास भेजा, जो उनका अपना नहीं था, और वीरा वल्लारा ने शायद एक ऐसे राजा को आश्रय देने से इनकार कर दिया था, जिसे कांबली देव ने नहीं भेजा था, लेकिन वीरा वल्लारा ने उसी धर्म का पालन किया जैसे कि कांबली देव, और इस प्रकार तीसरी बार मुस्लिम आक्रमण ाकारियों के लिए अपने देश का बलिदान कर दिया। लेकिन यह लंबे समय तक नहीं चला, क्योंकि वीरा वल्लर घोड़े की तरह गिरने पर अपनी पुरानी आत्मा को पुनर्जीवित करने में सक्षम थे।दक्षिण भारत के एकमात्र सम्राट वीरा वल्लालर, जो दिल्ली सुल्तान के एक सहायक राजा थे, ने इस बार कई गुप्त समाज फैलाए पूरे दक्षिण भारत में, 72 शूरवीरों को एकजुट किया और उनकी जरूरत की सभी चीजों के साथ हिंदू इंपीरियल कन्फेडरेशन का गठन किया। उन्होंने मदद भी की।

समूह ने दक्षिण भारत में फैले तुलुका साम्राज्यों पर युद्ध किया और उन्हें खदेड़ दिया। दक्षिण भारत की मुख्य सल्तनत मबार के मदुरै पर कब्जा करने वाले तुलुकों पर सीधे वीरा वल्लर ने आक्रमण किया। सेना ने 14 दिनों का समय मांगा, वीरा वल्लर, जो धर्म का पालन करते हैं, ने उन्हें उनके द्वारा मांगा गया समय दिया, लेकिन तुलुक सेना, जो नहीं जानती थी कि धर्म क्या है, आधी रात को वीरा वल्लर के महल में घुस गई और वीरा वल्लर को भाले से मार डाला।तनावपूर्ण स्थिति का फायदा उठाते हुए सुल्तान की सेना बहादुर वल्लारा को मदुरै ले गई और उसे मदुरै किले में पुआल चिपकाकर जिंदा लटका दिया।

वल्लल्वन्निया महाराजा को मुस्लिम आक्रमणकारियों ने बहुत ही क्रूर तरीके से मार डाला

मोरक्को के यात्री इब्न बदुता, जो उस दिन मदुरै में थे, ने इस घटना को देखा और दर्ज किया। बदूता रिकॉर्ड करता है कि सुल्तान घियासूद की हिंदुओं के खिलाफ कार्रवाई को देखकर वह हैरान रह गया और सुल्तान के इस क्रूर कृत्य की सजा के रूप में उसके बेटे और पत्नी की मृत्यु हो गई, और अंत में बहुत अधिक तेज दवा लेने के कारण उसकी भी मृत्यु हो गई।

सम्राट वीरा वल्लारा की मृत्यु के बाद, उनके द्वारा गठित 72 शूरवीरों के हिंदू साम्राज्यों के संघ ने मिलकर विजयनगर साम्राज्य का गठन किया। यह वह साम्राज्य था जिसने बाद में दक्षिण भारत के गढ़ के रूप में हमारे धर्म और संस्कृति की रक्षा की। यदि प्राचीन हिंदू मंदिर आज भी दक्षिण भारत में जीवित हैं, तो यह विजयनगर साम्राज्य के कारण है। वह विजयनगर साम्राज्य होयसल सम्राट वीरा वल्लारा ष्ष् द्वारा बोया गया सपना और बीज था। लेकिन आज तमिलनाडु में वीरा वल्लारा को क्या कहते हैं? उन्हें कन्नड़ का राजा कहा जाता है।

अब मैं आपको बताता हूं कि मैंने वीरा वल्लल्ला को जाति मिलान करके वन्निया राजा के रूप में क्यों पहचाना। वीरा वल्लर ने अपनी संस्कृत मीकीर्ति में स्वयं को द्वारगपति और वन्निया वंश का बताया है, इतना ही नहीं.. तिरुवन्नमलाई अरुणाचलेश्वर मंदिर के अरुणाचल पुराण का कहना है कि वीरा वल्लर अनल कुलथॉन हैं, मन्ना वन्निया वंश से हैं। कुछ लोग सोच सकते हैं कि वन्नियार तमिल हैं.. होयसाल कन्नड़ राजा हैं, यह कैसे संभव है। इसे समझने के लिए हमें उस राज्य होयसला के नाम का कारण जानने की आवश्यकता है।

कन्नड़ शब्द होयसल की पृष्ठभूमि के इतिहास को होयसला के शिलालेखों में खोजा जा सकता है, जिसमें कहा गया है कि एक समय में चालन नाम का एक राजा था, जिसने तपस्या करते हुए, एक ऋषि को एक हमलावर बाघ को मारने के लिए कहा और होई साला कहा। इसका मतलब है कि ओ.. साला ने उस बाघ को मार डाला, इसीलिए सभी होयसल मंदिरों में बाघ को मारते हुए एक योद्धा की मूर्ति है, और दिलचस्प बात यह है कि यह कहानी तमिल के एक प्राचीन संगम साहित्य पुराणानु में भी पाई जाती है।

पुराण सौ 201 में एक श्लोक है जिसमें इरुंगोवेल नाम के एक वेलिर राजा को परी नाम के एक अन्य वेलिर राजा की बेटियों से शादी करने के लिए कहा गया है जो युद्ध में मारे गए थे।

उस गीत में इरुंगोवेल के वेलिर कबीले ने 49 पीढ़ियों तक कृष्ण द्वारा शासित द्वारका पर शासन करने का दावा किया है और इरुंगोवेल पुली कादी मल वंश से उतरे हैं, जहां पुली कदीमल कोई और नहीं बल्कि होयसला द्वारा संदर्भित सलेन है। होयसला और पुलिकादी मॉल एक ही शब्द हैं। इस प्रकार, होयसल साम्राज्य प्रसिद्ध वेलिर वंश के वंश से संबंधित था जो संगम काल से है। उनका मूल द्वारका, भगवान कृष्ण है। केवल उन्हें ही नहीं.. दक्षिण भारत के सभी साम्राज्य उत्तर से आए, चोल खुद को गौड़ राष्ट्र से और श्री रामपिरान के इश्गुकु कबीले से कहते हैं। लेकिन तमिलनाडु में वे अलग जाति के रूप में अलगाववाद की बात कर रहे हैं।

इन अलगाववादी विचारों को निष्प्रभावी करने के लिए आज भी वन्नियार तिरुवन्नामलाई में सम्राट वीरा वल्ला. रा को तिथि देते हैं। यह विश्वास कि तिरुवन्नामलाई अरुणाचलेश्वर स्वयं एक पुत्र के रूप में पैदा हुए थे और वीरा वल्लाराा को तिथि दी थी, एक महान इतिहास के अवशेष के रूप में पिछले 700 वर्षों से चली आ रही है।

क्या यह सही है कि हिन्दू साम्राज्य के संस्थापक, दक्षिण भारत के रक्षक, वीर वल्लर तृतीय का बलिदान महज एक कर्मकांड है, यह कितने अफसोस की बात है? उनकी शहादत के बारे में छत्रपति शिवाजी और प्रथमा की तरह लचित् पोरबुखन की तरह बात की जानी चाहिए और तिरुवन्नामलाई में उनके लिए एक विशाल मूर्ति और घंटी मंडपम बनाया जाना चाहिए। तभी उनका वीरतापूर्ण इतिहास आने वाली पीढ़ियों के लिए एक धब्बा बनकर रह जाएगा। मैं यह कहकर उत्तर देता हूं कि हमारा अगला लक्ष्य दक्षिण भारत में राष्ट्रीय विचार को मजबूत बनाना होना चाहिए।

धन्यवाद।

कार्यक्रम में भाग लेने वालों की टिप्पणियां

मैं एक दर्शक के रूप में इस कार्यक्रम में शामिल होकर बहुत खुश हूं। अंगदान पर नरेंद्र मोदी के विचार सुनने के बाद हमने अपने पूरे परिवार के साथ अंगदान करने का फैसला किया है। मैं यहां के बुजुर्गों से अनुरोध करता हूं कि वे हमें उसके लिए उपाय बताकर हमारा मार्गदर्शन करें।

—मालिनी जयचंद्रन, शिक्षिका

इस कार्यक्रम में भाग लेने के बाद मुझे लगा कि मुझे अब से कभी भी प्रधानमंत्री के मनकीबात भाषणों को मिस नहीं करना चाहिए।

— जयंती अयंगर, घर की मुखिया

यह एक अच्छी शुरुआत है। इससे मनकीबाद कार्यक्रम को अधिक लोगों तक पहुंचने में मदद मिलेगी। यह विचार सराहनीय है।

—कनाल कन्नन, फिल्म निर्देशक

इस कार्यक्रम में बोलने वालों ने वाकई अपने दिल की बात कही. यह एक अद्भुत घटना है। मुझे इस बात पर गर्व महसूस हुआ कि इस देश को इतना महान नेता मिला है।

—रमणन, सेवानिवृत्त सरकारी सेवक।

Celebrating
MannkiBaat

#ThoughtsOn
MannkiBaat
Discussion Forum

thoughtsonmannkibaat.in

4/10, Malaviya Avenue 3rd Street, Tiruvanmiyur

info@thoughtsonmannkibaat.in

+91 99402 84523

मनकीबात कार्यक्रम India's Transformationका एक ऐतिहासिक दस्तावेज है

मन की बात को सुनना ही काफी नहीं है । सोचना काफी नहीं है । यह जश्न मनाने के लिए कुछ है

- अश्वथामन